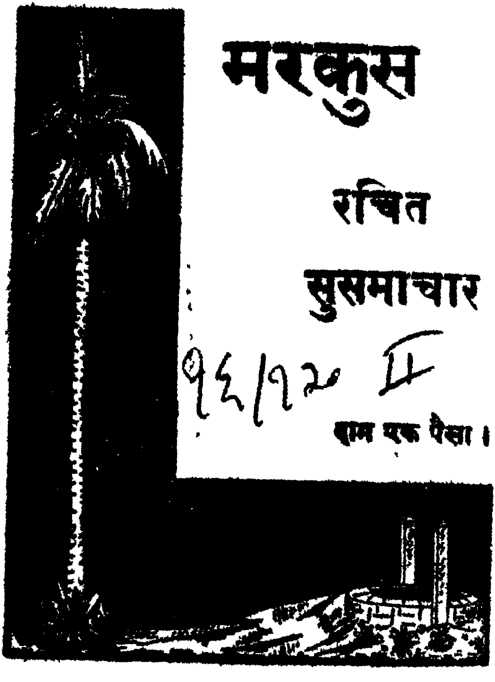


# मरकुस

रचित

# सुसमाचार



दाम एक पैसा।

# मरकुस रचित सुसमाचार।

१. परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का
आरम्भ। २ जैसे यशायाह नबी की पुस्तक में लिखा
है कि देख मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं जो तेरा मार्ग
सुधारेगा। ३ जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है
कि प्रभु का मार्ग तैयार करो उस की सड़कें सीधी करो।
४ यूहन्ना आया जो जंगल में बपतिस्मा देता और पापों की
क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिसमा का प्रचार करता था।
५ और सारे यहूदिया देश के और यरूशलेम के सब रहनेवाले
उस के पास निकल आने और अपने अपने पापों को मानकर
यरदन नदी में उस से बपतिसमा लेने लगे। ६ यूहन्ना ऊंट
के रोम का वस्त्र पहिने और अपनी कमर में चमड़े का पटुका
बान्धे हुए था और टिड्डियां और बन मधु खाया करता था।
७ उस ने प्रचार कर कहा मेरे पीछे वह आता है जो मुझ से
शक्तिमान है मैं इस योग्य नहीं कि झुककर उस के जूतों का
बन्ध खोलूं। ८ मैं ने तो तुम्हें पानी से बपतिसमा दिया पर
वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिसमा देगा॥

९ उन दिनों में यीशु ने गलील के नासरत से आकर
यरदन में यूहन्ना से बपतिसमा लिया। १० और तुरन्त पानी से
निकल कर ऊपर आते हुए उस ने आकाश को फटते और आत्मा
को कबूतर की नाईं अपने ऊपर उतरते देखा। ११ और यह
आकाश बाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है तुझ से मैं प्रसन्न हूं॥
१२ तब आत्मा ने तुरन्त उस को जंगल की ओर भेजा।
१३ और जंगल में चालीस दिन तक शैतान ने उस की
परीक्षा की और वह बन पशुओं के साथ रहा और स्वर्ग
दूत उस की सेवा करते रहे॥
१४ यूहन्ना के पकड़वाए जाने के पीछे यीशु ने गलील
में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया।
१५ और कहा समय पूरा हुआ है और परमेश्वर का राज्य
निकट आया है मन फिराओ और सुसमाचार पर बिश्वास करो॥
१६ गलील की झील के किनारे किनारे जाते हुए उसने
शमौन और उस के भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते
देखा क्योंकि वे मछुवे थे। १७ और यीशु ने उन से कहा मेरे
पीछे चले आओ मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा।
१८ वे तुरन्त जालों को छोड़कर उस के पीछे हो लिये।
१९ और कुछ आगे बढ़कर उस ने जबदी के पुत्र याकूब और
उस के भाई यूहन्ना को नाव पर जालों को सुधारते देखा।
२० उस ने तुरन्त उन्हें बुलाया और वे अपने पिता जबदी
को मजदूरों के साथ नाव पर छोड़कर उस के पीछे चले गये॥

२१ और वे कफरनहूम में आए और वह तुरन्त बिश्राम
के दिन सभा के घर में जाकर उपदेश करने लगा। २२ और
लोग उस के उपदेश से चकित हुए क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों
की नाईं नहीं पर अधिकारी की नाईं उपदेश देता था।
२३ उसी समय उन की सभा के घर में एक मनुष्य था जिस
में एक अशुद्ध आत्मा थी। २४ उस ने चिल्लाकर कहा हे यीशु
नासरी हमें तुझ से क्या काम। क्या तू हमें नाश करने आया
है। मैं तुझे जानता हूं तू कौन है परमेश्वर का पवित्र जन।
२५ यीशु ने उसे डांटकर कहा चुप रह और उस में से निकल
जा। २६ तब अशुद्ध आत्मा उस को मरोड़कर और बड़े शब्द
से चिल्लाकर उस में से निकल गया। २७ इस पर सब लोग
ऐसे अचम्भित हुए कि आपस में पूछ पाछ करके कहने लगे
यह क्या बात है। यह तो कोई नया उपदेश है वह अधिकार
के साथ अशुद्ध आत्माओं को भी आज्ञा देता है और वे उस
की मानते हैं। २८ सो उस का नाम तुरन्त गलील के आस
पास के सारे देश में हर जगह फैल गया॥

२९ सभा के घर से तुरन्त निकलकर वे याकूब और
यूहन्ना के साथ शमौन और अन्द्रियास के घर में आए।
३० और शमौन की सास तप में पड़ी थी और उन्हों ने तुरन्त
उस के विषय में उस से कहा। ३१ तब उस ने पास जा उस
का हाथ पकड़ के उसे उठाया और तप उस पर से उतर गई
और वह उन की सेवा करने लगी॥

३२ सांझ को जब सूरज डूब गया तो लोग सब बीमारों
और उन्हें जिन में दुष्टात्मा थे उस के पास लाए। ३३ और
सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हुआ। ३४ और उस ने बहुतों को
जो नाना प्रकार की बीमारियों से दुखी थे चंगा किया और
बहुत दुष्टात्माओं को निकाला और दुष्टात्माओं को बोलने न
दिया क्योंकि वे उसे पहचानते थे॥

३५ और भोर को दिन निकलने से बहुत पहिले वह उठकर
निकला और जंगली जगह में जाकर वहां प्रार्थना करने लगा।
३६ तब शमौन और उस के साथी उस की खोज में गए।
३७ जब वह मिला तो उससे कहा सब लोग तुझे ढूँढ रहे हैं।
३८ उस ने उन से कहा आओ हम और कहीं आस पास की
बस्तियों में जाएं कि मैं वहां भी प्रचार करूं क्योंकि मैं इसीलिए
निकला हूं। ३९ सो वह सारे गलील में उन की सभाओं में
जा जाकर प्रचार करता और दुष्टात्माओं को निकालता रहा॥

४० और एक कोढ़ी ने उस के पास आकर उस से बिनती
की और उस के सामने घुटने टेककर उस से कहा यदि तू चाहे
तो मुझे शुद्ध कर सकता है। ४१ उसने उस पर तरस खाकर
हाथ बढ़ाया और उसे छूकर कहा मैं चाहता हूं शुद्ध हो जा।
४२ और तुरन्त उस का कोढ़ जाता रहा और वह शुद्ध हो
गया। ४३ तब उस ने उसे चिताकर तुरन्त बिदा किया।
४४ और उस से कहा देख किसी से कुछ न कह पर जा अपने
आप को याजक को दिखा और अपने शुद्ध होने के विषय में

जो कुछ मूसा ने ठहराया उसे चढ़ा कि उन पर गवाही हो।
४५ पर वह बाहर जाकर इस बात को बहुत प्रचार करने
और यहां तक फैलाने लगा कि यीशु फिर खुल्लमखुल्ला नगर
में न जा सका पर बाहर जंगली जगहों में रहा और चारों
ओर से लोग उस के पास आते रहे॥

२ कई दिन के पीछे वह फिर कफरनहूम में आया
और सुना गया कि वह घर में है। २ फिर इतने
लोग इकट्ठे हुए कि द्वार के पास भी जगह न मिली और
वह उन्हें बचन सुना रहा था। ३ और कई लोग एक झोले
के मारे हुए को चार मनुष्यों से उठवाकर उस के पास ले
आए। ४ पर जब वे भीड़ के कारण उस के निकट न पहुँच
सके तो उन्हों ने उस छत को जिस के नीचे वह था खोल
दिया और जब उसे उधेड़ चुके तो उस खाट को जिस पर
झोले का मारा पड़ा था लटका दिया। ५ यीशु ने उन का
बिश्वास देखकर उस झोले के मारे से कहा हे पुत्र तेरे पाप
क्षमा हुए। ६ और कई एक शास्त्री जो वहां बैठे थे अपने
अपने मन में बिचार करने लगे, ७ कि यह मनुष्य क्यों ऐसा
कहता है यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है परमेश्वर को
छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है। ८ यीशु ने तुरन्त
अपने आत्मा में जाना कि वे अपने अपने मन में ऐसा बिचार कर
रहे हैं और उन से कहा तुम अपने अपने मन में यह बिचार
क्यों कर रहे हो। ९ सहज क्या है क्या झोले के मारे से यह

कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए या यह कहना कि उठ अपनी
खाट उठा कर चल फिर । १० पर जिस से तुम जानो कि
मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का अधिकार
है ( उसने उस झोले के मारे से कहा ) । ११ मैं तुझ से
कहता हूं उठ अपनी खाट उठा कर अपने घर चला जा ।
१२ और वह उठा और तुरन्त खाट उठाकर और सब के सामने
निकलकर चला गया । इस पर सब चकित हुए और परमेश्वर
की बड़ाई करके कहने लगे कि हम ने ऐसा कभी न देखा ॥

१३ वह फिर निकलकर झील के किनारे गया और सारी
भीड़ उस के पास आई और वह उन्हें उपदेश देने लगा ।
१४ जाते हुए उस ने हलफई के पुत्र लेवी को महसूल की
चौकी पर बैठे देखा और उस से कहा मेरे पीछे हो ले ।
१५ और वह उठकर उस के पीछे हो लिया । और वह उस के
घर में भोजन करने बैठा और बहुत से महसूल लेनेवाले और
पापी यीशु और उस के चेलों के साथ भोजन करने बैठे
क्योंकि वे बहुत थे और उस के पीछे हो लिए थे । १६ और
शास्त्रियों और फरीसियों ने यह देखकर कि वह तो पापियों
और महसूल लेनेवालों के साथ भोजन कर रहा है उस के
चेलों से कहा वह तो महसूल लेनेवालों और पापियों के
साथ खाता पीता है । १७ यीशु ने यह सुनकर उन से कहा
वैद्य भले चंगों को नहीं पर बीमारों को अवश्य है मैं धर्मियों
को नहीं पर पापियों को बुलाने आया हूं ॥

१८ यूहन्ना के चेले और फरीसी उपवास करते थे और
उन्हों ने आकर उस से यह कहा कि यूहन्ना के और फरीसियों के
चेले क्यों उपवास रखते हैं पर तेरे चेले उपवास नहीं रखते।
१९ यीशु ने उन से कहा जब तक दूल्हा बरातियों के साथ
रहता है क्या वे उपवास कर सकते हैं। सो जब तक दूल्हा उन
के साथ है तब तक वे उपवास नहीं कर सकते। २० पर वे दिन
आएंगे कि दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा उस समय वे उप-
वास करेंगे। २१ कोरे कपड़े का पैवन्द पुराने पहिरावन पर
कोई नहीं लगाता नहीं तो वह पैवन्द उससे कुछ खींच लेगा
अर्थात् नया पुराने से और वह और फट जायगा। २२ और नया
दाखरस पुरानी मशकों में कोई नहीं भरता नहीं तो दाखरस
मशकों को फाड़ देगा और दाखरस और मशकें दोनों नाश
हो जाएंगी पर नया दाखरस नई मशकों में भरते हैं॥

२३ विश्राम के दिन यीशु खेतों में से जा रहा था और
उस के चेले चलते चलते बालें तोड़ने लगे। २४ तब फरीसियों
ने उस से कहा देख ये विश्राम के दिन वह काम क्यों करते
हैं जो उचित नहीं। २५ उस ने उन से कहा क्या तुम ने कभी
नहीं पढ़ा कि जब दाऊद को ज़रूरत थी और वह और उस
के साथी भूखे हुए तब उस ने क्या किया था। २६ उस ने
क्योंकर अबियातार महायाजक के समय परमेश्वर के घर में
जाकर भेंट की रोटियां खाईं जिन्हें खाना याजकों को छोड़
और किसी को उचित नहीं और अपने साथियों को भी दीं।

२७ और उस ने उन से कहा विश्राम का दिन मनुष्य के लिए
ठहराया गया है न कि मनुष्य विश्राम के दिन के लिए।
२८ सो मनुष्य का पुत्र विश्राम के दिन का भी प्रभु है॥
३. और वह फिर सभा के घर में गया और वहां एक
मनुष्य था जिस का हाथ सूख गया था। २ और
वे उस पर दोष लगाने के लिए उस की ताक में लगे थे कि
वह विश्राम के दिन में उसे चंगा करेगा कि नहीं। ३ उस ने
सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा बीच में खड़ा हो। ४ और उन
से कहा क्या विश्राम के दिन भला करना या बुरा करना जीव
को बचाना या मारना उचित है पर वे चुप रहे। ५ और उस
ने उनके मन की कठोरता से उदास होकर उन को क्रोध से
चारों ओर देखा और उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा
उस ने बढ़ाया और उस का हाथ फिर अच्छा हो गया।
६ तब फरीसी बाहर जाकर तुरन्त हेरोदियों के साथ उस के
विरोध में सम्मति करने लगे कि उसे क्योंकर नाश करें॥
७ यीशु अपने चेलों के साथ झील की ओर गया और
गलील से बहुत से लोग उस के पीछे हो लिए और यहूदिया
८ और यरूशलेम और इदूमया से और यरदन के पार और
सूर और सैदा के आसपास से बहुत से लोग यह सुनकर कि
वह कैसे बड़े काम करता है उस के पास आए। ९ और उस
ने अपने चेलों से कहा भीड़ के कारण एक छोटी नाव मेरे
लिए तैयार रहे न हो कि वे मुझे दबाएं। १० क्योंकि उस ने

बहुतों को अच्छा किया था यहां तक कि जितने रोगी थे उसे
छूने को उस पर गिरे पड़ते थे। ११ अशुद्ध आत्मा भी जब
उसे देखते थे तो उस के आगे गिरते और चिल्ला कर कहते थे
कि तू परमेश्वर का पुत्र है। १२ और उस ने उन्हें बहुत
चिताया कि मुझे प्रगट न करना॥

१३ और वह पहाड़ पर चढ़ गया और जिन्हें चाहा उन्हें
अपने पास बुलाया और वे उस के पास चले आए। १४ तब
उसने बारह जनों को ठहराया कि वे उस के साथ साथ रहें
१५ और वह उन्हें भेजे कि प्रचार करें और दुष्टात्माओं के
निकालने का अधिकार रखें १६ और वे ये हैं शमोन जिस
का नाम उस ने पतरस रखा। १७ और जबदी का पुत्र याकूब
और याकूब का भाई यूहन्ना जिन का नाम उस ने बूअनरगिस
अर्थात् गर्जन के पुत्र रक्खा। १८ और अन्द्रियास और
फिलिप्पुस और बरतुलमै और मत्ती और तोमा और हलफई
का पुत्र याकूब और तद्दी और शमौन कनानी। १९ और
यहूदा इस्करियोती जिस ने उसे पकड़वा भी दिया॥

२० और वह घर में आया। और ऐसी भीड़ इकट्ठी हो
गई कि वे रोटी भी न खा सके। २१ जब उस के कुटुम्बियों
ने सुना तो उसे पकड़ने को निकले क्योंकि कहते थे कि उस
का चित्त ठिकाने नहीं है। २२ तब शास्त्री जो यरूशलेम से
आए थे यह कहने लगे कि उस में शैतान है और यह भी

कि वह दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं
को निकालता है । २३ और वह उन्हें पास बुलाकर उन से
दृष्टान्तों में कहने लगा शैतान क्योंकर शैतान को निकाल
सकता है । २४ और यदि किसी राज्य में फूट पड़े तो वह
राज्य रह नहीं सकता । २५ और यदि किसी घर में फूट पड़े
तो वह घर रह नहीं सकता । २६ और यदि शैतान अपने ही
विरोध में होकर अपने में फूट डाले तो वह बना नहीं रह
सकता पर उस का अन्त हो जाता है । २७ और कोई मनुष्य
किसी बलवन्त के घर में घुसकर उस का माल लूट नहीं सकता
जब तक कि वह पहिले उस बलवन्त को न बांध ले और तब
उसके घर को लूट लेगा । २८ मैं तुम से सच कहता हूं कि
मनुष्यों के सन्तान के सब पाप और निन्दा जो वे करते हैं
क्षमा की जाएगी । २९ पर जो कोई पवित्रात्मा के विरुद्ध
निन्दा करे वह कभी क्षमा न किया जायगा पर अनन्त पाप
का अपराधी ठहरता है । ३० क्योंकि वे यह कहते थे कि
उस में अशुद्ध आत्मा है ॥

३१ और उसकी माता और उस के भाई आए और
बाहर खड़े होकर उसे बुला भेजा । ३२ और भीड़ उस के
आस पास बैठी थी और उन्हों ने उस से कहा देख तेरी माता
और तेरे भाई बाहर तुझे ढूंढ़ते हैं । ३३ उस ने उन्हें उत्तर
दिया कि मेरी माता और मेरे भाई कौन हैं ३४ और उन पर
जो उस के आस पास बैठे थे दृष्टि करके कहा देखो मेरी माता

और मेरे भाई । ३५ क्योंकि जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर
चले वही मेरा भाई और बहिन और माता है ॥

४. वह फिर झील के किनारे उपदेश करने लगा और
ऐसी बड़ी भीड़ उस के पास इकट्ठी हो गई कि वह
झील में एक नाव पर चढ़ कर बैठा और सारी भीड़ भूमि पर
झील के किनारे रही । २ और वह उन्हें दृष्टान्तों में बहुत
सी बातें सिखाने लगा और अपने उपदेश में उन से कहा ।
३ सुनो देखो एक बोनेवाला बीज बोने निकला । ४ और बोते
हुए कुछ मार्ग के किनारे गिरा और पक्षियों ने आकर उसे चुग
लिया । ५ और कुछ पत्थरीली भूमि पर गिरा जहां उस को
बहुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण
जल्द उग आया । ६ और जब सूरज निकला तो जल गया और
जड़ न पकड़ने से सूख गया । ७ और कुछ झाड़ियों में गिरा और
झाड़ियों ने बढ़कर उसे दबा लिया और वह फल न लाया ।
८ पर कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और उगा और बढ़कर फला
और कोई तीस गुना कोई साठ गुना कोई सौ गुना फल लाया
९ और उसने कहा जिस के सुनने के कान हों वह सुन ले ॥

१० जब वह अकेला रह गया तो उस के साथी उन
बारह समेत उस से इन दृष्टान्तों के विषय में पूछने लगे ।
११ उस ने उन से कहा तुम को परमेश्वर के राज्य के भेद
की समझ दी गई है पर बाहरवालों के लिये सब बातें दृष्टान्तों

में होता है । १२ इसलिये कि वे देखते हुए देखें और उन्हें
न सूझे और सुनते हुए सुनें और न समझें ऐसा न हो कि वे
फिरें और क्षमा किए जाएं । १३ फिर उस ने उन से कहा
क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते तो सब दृष्टान्तों को क्योंकर
समझोगे । १४ बोने वाला बचन बोता है । १५ मार्ग के
किनारे के जहां बचन बोया जाता है ये वे हैं कि जब उन्होंने
सुना तो शैतान तुरन्त आकर बचन को जो उन में बोया गया था
उठा ले जाता है; १६ और वैसे ही जो पत्थरीली भूमि पर बोए
जाते हैं ये वे हैं कि जो बचन को सुन कर तुरन्त आनन्द से
मान लेते हैं । १७ पर अपने में जड़ न रखने से वे थोड़े ही
देर के हैं इस के पीछे जब बचन के कारण क्लेश या उपद्रव
होता है तो तुरन्त ठोकर खाते हैं । १८ और जो झाड़ियों में
बोए गए वे हैं जिन्हों ने बचन सुना १९ और संसार की चिन्ता
और धन का धोखा और और वस्तुओं का लोभ उन में समाकर
बचन को दबा देता है और वह फल नहीं लाता । २० और जो
अच्छी भूमि में बोए गए ये वे हैं जो बचन सुनकर मानते और
फल लाते हैं कोई तीस गुना कोई साठ गुना कोई सौ गुना ॥

२१ और उस ने उन से कहा क्या दिये को इसलिये लाते
हैं कि पैमाने या खाट के नीचे रखा जाए, क्या इस लिये नहीं
कि दीवट पर रखा जाए ? २२ कुछ छिपा नहीं पर इसलिये

कि प्रगट किया जाए और न कुछ गुप्त है पर इसलिए कि प्रगट
हो जाए। २३ यदि किसी के सुनने के कान हों तो सुन ले।
२४ फिर उस ने उन से कहा चौकस रहो कि क्या सुनते हो
जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जाएगा
और तुम को और दिया जाएगा। २५ क्योंकि जिस के पास
है उस को दिया जाएगा पर जिस के पास नहीं उस से जो कुछ
उस के पास है वह भी ले लिया जाएगा॥

२६ फिर उस ने कहा परमेश्वर का राज्य ऐसा है जैसा
कोई मनुष्य भूमि पर बीज छींटे। २७ और रात दिन सोए और
जागे और वह ऐसे उगे और बढ़े कि वह न जाने। २८ क्योंकि
पृथ्वी आप से आप फल लाती है पहिले अंकुर तब बाल और
तब बालों में तैयार दाना। २९ पर जब दाना पक चुका है तब
वह तुरन्त हंसिया लगाता है क्योंकि कटनी आ पहुंची है॥

३० फिर उस ने कहा हम परमेश्वर का राज्य किस की
नाईं ठहराएं और किस दृष्टान्त से उस का बखान करें।
३१ वह राई के दाने के समान है कि जब भूमि में बोया
जाता है तो भूमि के सब बीजों से छोटा होता है। ३२ पर
जब बोया गया तो उग कर सब साग पात से बड़ा हो जाता
है और उस की ऐसी बड़ी डालियां निकलती हैं कि आकाश
के पक्षी उस की छाया में बसेरा कर सकते हैं॥

३३ और वह उन्हें इस प्रकार के बहुत से दृष्टान्त दे देकर
उन की समझ के अनुसार वचन सुनाता था। ३४ और बिना

दृष्टान्त उन से कुछ न कहता था पर एकान्त में वह अपने निज
चेलों को सब बातों का अर्थ बताता था ॥
३५ उसी दिन जब सांझ हुई तो उस ने उन से कहा कि
आओ हम पार चलें। ३६ सो वे भीड़ को छोड़कर जैसा वह था
वैसा ही उसे नाव पर साथ ले चले और और नाव भी साथ थीं।
३७ और बड़ी आंधी आई और लहरें नाव पर यहां तक लगीं
कि वह अब भरी जाती थी। ३८ और वह आप पिछले भाग
में गद्दी पर सो रहा था और उन्हों ने उसे जगाकर उस से कहा
हे गुरु क्या तुझे चिन्ता नहीं कि हम नाश हुए जाते हैं।
३९ तब उस ने उठकर आंधी को डांटा और पानी से कहा चुप
रह थम जा और आंधी थम गई और बड़ा चैन हो गया। ४० और
उन से कहा क्यों डरते हो क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं।
४१ और वे बहुत ही डर गए और आपस में बोले यह कौन है
कि आंधी और पानी भी उस की आज्ञा मानते हैं ॥

५. और वे झील के पार गिरासेनियों के देश में पहुँचे।
२ और उस के नाव से उतरते ही एक मनुष्य जिस
में अशुद्ध आत्मा था क़बरों से निकल कर उसे मिला।
३ वह क़बरों में रहता था और कोई उसे सांकलों से भी न
बान्ध सकता था। ४ क्योंकि वह बार बार बेड़ियों और सांकलों
से बान्धा गया था पर उस ने सांकलों को तोड़ दिया और
बेड़ियों के टुकड़े टुकड़े कर दिए थे और कोई उसे बश में न
कर सकता था। ५ वह लगातार रात दिन क़बरों और पहाड़ों

में चिल्लाता और अपने को पत्थरों से काटता था। ६ वह
यीशु को दूर से देखकर दौड़ा और उसे प्रणाम किया।
७ और ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा हे यीशु परम प्रधान
परमेश्वर के पुत्र मुझे तुझ से क्या काम। मैं तुझे परमेश्वर
की किरिया देता हूं कि मुझे पीड़ा न दे। ८ क्योंकि उस ने
उस से कहा है अशुद्ध आत्मा इस मनुष्य से निकल आ।
९ उस ने उस से पूछा तेरा क्या नाम है। उस ने उस से
कहा मेरा नाम सेना है क्योंकि हम बहुत हैं। १० और उस
से बहुत बिनती किई कि हमें इस देश से बाहर न भेज।
११ वहां पहाड़ पर सूअरों का बड़ा झुण्ड चर रहा था।
१२ सो उन्हों ने उस से बिनती कर कहा कि हमें उन सूअरों
में भेज दे कि हम उन में पैठें। १३ सो उस ने उन्हें जाने
दिया और अशुद्ध आत्मा निकलकर सूअरों में पैठे और झुण्ड
जो कोई दो हज़ार का था कड़ाड़े पर से झपटकर झील में
जा पड़ा और डूब मरा। १४ और उनके चरवाहों ने भागकर
नगर और गांवों में जा सुनाया और जो हुआ था लोग देखने
आए। १५ और यीशु के पास आकर वे उस को जिस में
दुष्टात्मा थे अर्थात् जिस में सेना समाई थी कपड़े पहिने और
सचेत बैठे देखकर डर गए। १६ और देखनेवालों ने उस का
जिस में दुष्टात्मा थे और सूअरों का सारा हाल उन को कह
सुनाया। १७ और वे उस से बिनती करने लगे कि हमारे

सिवानों से चला जा। १८ जब वह नाव पर चढ़ने लगा तो
वह जिस में पहिले दुष्टात्मा थे उस से बिनती करने लगा कि
मुझे अपने साथ रहने दे। १९ पर उस ने नकारा और उस
से कहा अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुझ पर
दया करके प्रभु ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किये हैं। २० वह
जाकर दिकपुलिस में प्रचार करने लगा कि यीशु ने मेरे लिए
कैसे बड़े काम किए और सब अचम्भा करते थे॥

२१ जब यीशु फिर नाव से पार गया तो एक बड़ी भीड़ उस
के पास इकट्ठी हो गई और वह झील के किनारे था। २२ और
याईर नाम सभा के सरदारों में से एक आया और उसे देखकर
उसके पांवों पर गिरा। २३ और उस ने यह कहकर बहुत
बिनती किई कि मेरी छोटी बेटी मरने पर है। आकर उस पर
हाथ रख कि वह चंगी होकर जीती रहे। २४ तब वह उसके
साथ चला और बड़ी भीड़ उस के पीछे हो ली और लोग
उस पर गिरे पड़ते थे॥

२५ और एक स्त्री जिस को बारह बरस से लोहू बहने
का रोग था। २६ और जिस ने बहुत वैद्यों से बड़ा दुख
उठाया और अपना सब माल खर्च करने पर भी कुछ लाभ
न देखा था पर और भी रोगी हो गई थी। २७ यीशु की
चरचा सुनकर भीड़ में उस के पीछे से आई और उस के
वस्त्र को छुआ। २८ क्योंकि वह कहती थी यदि मैं उसके वस्त्र
ही को छू लूंगी तो चंगी हो जाऊंगी। २९ और तुरन्त उस

५। आंसू बहना बन्द हो गया और उस ने अपनी देह में जान लिया कि मैं उस पीड़ा से अच्छा हो गई। ३० यीशु ने तुरन्त अपने में जान लिया कि मुझसे सामर्थ निकली और भीड़ में पीछे फिर कर पूछा कि मेरा वस्त्र किसने छूआ। ३१ उसके चेलों ने उससे कहा तू देखता है कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है और तू कहता है कि किसने मुझे छूआ। ३२ तब उसने उसे देखने के लिए जिस ने यह काम किया था चारों ओर दृष्टि की। ३३ तब वह स्त्री यह जान कर कि मेरी कैसी भलाई हुई है डरती और कांपती आई और उसके पांवों पर गिरकर उस से सारा हाल सच सच कह दिया। ३४ उसने उससे कहा बेटी तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है कुशल से जा और अपनी पीड़ा से बची रह॥

३५ वह यह कह ही रहा था कि सभा के सरदार के घर से लोगों ने आ कर कहा तेरी बेटी तो मर गई तब गुरु को क्यों दुख देता है। ३६ जो बात वे कह रहे थे उस को यीशु ने अनसुनी करके सभा के सरदार से कहा मत डर केवल विश्वास रख। ३७ और उस ने पतरस और याकूब और याकूब के भाई यूहन्ना को छोड़ और किसी को अपने साथ आने न दिया। ३८ सभा के सरदार के घर पहुंचकर उस ने लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते देखा। ३९ उस ने भीतर जाकर उनसे कहा क्यों धूम मचाते और रोते हो। ४० लड़की मरी नहीं परसोता है। वे उसकी हंसी करने लगे पर उस ने सब को निकाल कर लड़की के माता पिता और अपने साथियों

को लेकर भीतर जहां लड़की पड़ी थी गया। ४१ और लड़की
का हाथ पकड़ कर उस से कहा तलीता कूमी जिस का अर्थ
यह है कि हे लड़की मैं तुझ से कहता हूं उठ। ४२ और लड़की
तुरन्त उठकर चलने फिरने लगी क्योंकि वह बारह बरस की
थी। ४३ और वे बहुत चकित हो गए। फिर उस ने उन्हें
चिताकर आज्ञा दी कि यह बात कोई जानने न पाए और
कहा कि उसे कुछ खाने को दिया जाय॥

६. वहां से निकल कर वह अपने देश में आया और
१. उस के चेले उसके पीछे हो लिए। २ विश्राम के
दिन वह सभा में उपदेश करने लगा। और बहुत लोग सुनकर
चकित हुए और कहने लगे इस को ये बातें कहां से आ
गईं और यह कौन सा ज्ञान है जो उस को दिया गया है
और कैसे सामर्थ के काम इस के हाथों से होते हैं। ३ यह
क्या वही बढ़ई नहीं जो मरयम का पुत्र और याकूब और योसेस
और यहूदा और शमौन का भाई है और क्या उसकी बहिनें
यहां हमारे बीच में नहीं रहतीं। सो उन्हों ने उसके विषय
ठोकर खाई। ४ यीशु ने उन से कहा नबी अपने देश और अपने
कुटुम्ब और अपने घर को छोड़ और कहीं निरादर नहीं
होता। ५ और वह वहां कोई सामर्थ का काम न कर सका केवल
थोड़े बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया॥

६ और उस ने उन के अविश्वास से अचम्भा किया और
चारों ओर के गांवों में उपदेश करता फिरा॥

७ और वह बारहों को अपने पास बुलाकर उन्हें दो दो
करके भेजने लगा और उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार
दिया । ८ और उस ने उन्हें आज्ञा दी कि मार्ग के लिए
लाठी छोड़ और कुछ न लो न रोटी न झोली न पटुके में
पैसे । ९ पर जूतियां पहिनो और दो दो कुरते न पहिनो ।१०
और उस ने उन से कहा जहां कहीं तुम किसी घर में उतरो
जब तक वहां से बिदा न हो तब तक उसी में ठहरे रहो ।
११ जिस जगह के लोग तुम्हें ग्रहण न करें और तुम्हारी न
सुनें वहां से चलते ही अपने तलवों की धूल झाड़ डालो कि
उन पर गवाही हो । १२ सो उन्हों ने जाकर प्रचार किया
कि मन फिराओ । १३ और बहुतेरे दुष्टात्माओं को निकाला
और बहुत बीमारों पर तेल मलकर उन्हें चंगा किया ॥

१४ और हेरोदेस राजा ने उस की चरचा सुनी क्योंकि
उस का नाम फैल गया था और कहा यूहन्ना बपतिसमा देने-
वाला मरे हुओं में से जी उठा है इसीलिए उस से ये सामर्थ
के काम प्रगट होते हैं । १५ और औरों ने कहा यह एलियाह
है पर औरों ने कहा नबी या नबियों में से किसी एक के समान
है । १६ हेरोदेस ने यह सुन कर कहा जिस यूहन्ना का मैं ने
सिर कटवाया था वही जी उठा है । १७ क्योंकि हेरोदेस ने
आप अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण
जिस से उस ने ब्याह किया था लोगों को भेजकर यूहन्ना
को पकड़वा कर जेलखाने में डाल दिया था । १८ इस लिये

कि यूहन्ना ने हेरोदेस से कहा था कि अपने भाई की पत्नी
को रखना तुझे उचित नहीं। १९ सो हेरोदियास उससे बैर
रखती और यह चाहती थी कि उसे मरवा डाले पर बन न
पड़ा। २० क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना को धर्म्मी और पवित्र
पुरुष जानकर उससे डरता और उसे बचाए रखता था और
उसकी सुनकर बहुत घबराता था पर सुनता खुशी से था।
२१ और ठीक अवसर उस दिन मिला जब हेरोदेस ने अपने
जन्म दिन में अपने प्रधानों और सेनापतियों और गलील के
बड़े लोगों के लिये जेवनार की। २२ और उसी हेरोदियास
की बेटी भीतर आई और नाच कर हेरोदेस को और उस के
साथ बैठनेवालों को खुश किया तब राजा ने लड़की से कहा
जो चाहे मुझसे मांग मैं तुझे दूंगा। २३ और उससे किरिया
खाई कि मेरे आधे राज्य तक जो कुछ तू मुझसे मांगेगी मैं
तुझे दूंगा। २४ उसने बाहर जाकर अपनी माता से पूछा मैं
क्या मांगूं। २५ वह बोली यूहन्ना बपतिसमा देनेवाले का
सिर। वह तुरन्त जल्दी से राजा के पास भीतर आई और
उस से बिनती की मैं चाहती हूं कि तू अभी यूहन्ना बपतिसमा
देनेवाले का सिर एक थाल में मुझे मंगवा दे। २६ तब राजा
बहुत उदास हुआ पर अपनी किरियाओं और साथ बैठनेवालों
के कारण उसे टालना न चाहा। २७ और राजा ने तुरन्त
एक सिपाही को आज्ञा देकर भेजा कि उसका सिर काट
लाए। २८ सो उसने जेलखाने में जाकर उसका सिर काटा

और एक थाल में रखकर लाया और लड़की को दिया और
लड़की ने अपनी मां को दिया। २९ यह सुनकर उस के चेले
आए और उस की लोथ को उठाकर कबर में रक्खा ॥

३० प्रेरितों ने यीशु के पास इकट्ठे होकर जो कुछ उन्हों
ने किया और सिखाया था सब उस को बता दिया। ३१ उस
ने उन से कहा तुम आप अलग किसी जंगली जगह में आकर
थोड़ा बिश्राम करो क्योंकि बहुत लोग आते जाते थे और
उन्हें खाने का अवकाश भी न मिलता था। ३२ सो वे नाव
पर चढ़कर सुनसान जगह में अलग चले गए। ३३ और
बहुतों ने उन्हें जाते देखकर पहचान लिया और सब नगरों
से इकट्ठे होकर वहां पैदल दौड़े और उन से पहले जा पहुंचे
३४ उस ने निकलकर बड़ी भीड़ देखी और उन पर तरस
खाया क्योंकि वे उन भेड़ों के समान थे जिन का रखवाला
नहीं और वह उन्हें बहुत बातें सिखाने लगा। ३५ जब दिन
बहुत ढल गया तो उस के चेले उस के पास आकर कहने
लगे यह सुनसान जगह है और दिन बहुत ढल गया है।
३६ उन्हें बिदा कर कि चारों ओर के गांवों और बस्तियों में
जाकर अपने लिये कुछ खाने को मोल लें। ३७ उस ने उन्हें
उत्तर दिया कि तुम ही उन्हें खाने को दो। उन्हों ने उस से
कहा क्या हम जाकर दो सौ दीनार की रोटियां लें और उन्हें
खिलाएं। ३८ उस ने उन से कहा जाकर देखो तुम्हारे पास कितनी

रोटियां हैं । उन्हों ने मालूम करके कहा पांच और दो मछली
भी । ३६ तब उस ने उन्हें आज्ञा दी कि सब को हरी
घास पर पांति पांति बैठा दो । ४० वे सौ सौ और पचास
पचास करके पांति पांति बैठ गए । ४१ और उस ने इन पांच
रोटियों और दो मछलियों को लिया और स्वर्ग की ओर देख
कर धन्यवाद किया और रोटियां तोड़ तोड़कर चेलों को देता
गया कि वे लोगों को परोसें और वे दो मछलियां भी उन सब
में बांट दीं । ४२ सो सब खाकर तृप्त हुए । ४३ और उन्हों
ने टुकड़ों से बारह टोकरी भर कर उठाईं और कुछ मछलियों
से भी । ४४ जिन्हों ने रोटी खाई वे पांच हजार पुरुष थे ॥

४५ तब उसने तुरन्त अपने चेलों को बरबस नाव पर
चढ़ाया कि वे उस से पहिले उस पार बैतसैदा चले जाएं जब
तक कि वह लोगों को विदा करे । ४६ और उन्हें विदा करके
पहाड़ पर प्रार्थना करने को गया । ४७ और जब सांझ हुई
तो नाव झील के बीच में थी और वह अकेला भूमि पर
था । ४८ और जब उस ने देखा कि वे खेते खेते घबरा गए
हैं क्योंकि हवा उन के सामने थी तो रात के चौथे पहर के
निकट वह झील पर चलते हुए उन के पास आया और उन
से आगे निकल जाना चाहता था । ४६ पर उन्हों ने उसे
झील पर चलते देख कर समझा कि भूत है और चिल्ला उठे ।
५० क्योंकि सब उसे देखकर घबरा गये थे पर उसने तुरन्त उन
से बातें कीं और कहा ढाढ़स बान्धो मैं हूं डरो मत । ५१ तब

वह उन के पास नाव पर चढ़ा और हवा थम गई और वे
बहुत ही चकित हुए। ५२ क्योंकि वे उन रोटियों के विषय
में न समझे पर उन के मन कठोर हो गए थे॥

५३ और वे पार उतर कर गन्नेसरत में पहुंचे और लगान
किया। ५४ जब वे नाव पर से उतरे तो लोग तुरन्त उस को
पहचान कर ५५ आस पास के सारे देश में दौड़े और बीमारों
को खाटों पर डाल कर जहां जहां उस के होने का समाचार
पाया वहां ले जाने लगे। ५६ और जहां कहीं वह गांवों नगरों
वा खेड़ों में जाता था तो लोग बीमारों को बाजारों में रखकर
उस से बिनती करते थे कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही
को छूने दे और जितने उसे छूते थे सब चंगे हो जाते थे॥

७ तब फरीसी और कई एक शास्त्री जो यरूशलेम
से आए थे उस के पास इकट्ठे हुए। २ और
उन्होंने उस के कई एक चेलों को अशुद्ध अर्थात् बिना हाथ
धोए रोटी खाते देखा। ३ क्योंकि फरीसी और सब यहूदी
पुरनियों की रीति पर चलते हैं और जब तक भली भांति
हाथ नहीं धो लेते तब तक नहीं खाते। ४ और बाजार से
आकर जब तक स्नान न कर लेते तब तक नहीं खाते और
बहुत सी और बातें हैं जो उनके पास मानने के लिए पहुँचाई
गई हैं जैसे कटोरों और लोटों और तांबे के बरतनों को
धोना। ५ सो उन फरीसियों और शास्त्रियों ने उस से पूछा

कि तेरे चेले क्यों पुरनियों की रीतों पर नहीं चलते पर बिना
हाथ धोए रोटी खाते हैं । ६ उस ने उन से कहा कि यशायाह
ने तुम कपटियों के विषय में ठीक नबूवत की जैसा लिखा है
कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं पर उन का मन
मुझ से दूर रहता है । ७ और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं
क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं ।
८ क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञा को टालकर मनुष्यों की
रीतों को मानते हो । ९ और उस ने उन से कहा तुम अपनी
रीतों को मानने के लिये परमेश्वर की आज्ञा कैसी अच्छी
तरह टाल देते हो । १० क्योंकि मूसा ने कहा अपने पिता
और अपनी माता का आदर कर और जो कोई पिता या माता
को बुरा कहे वह मार डाला जाए । ११ पर तुम कहते हो
यदि कोई अपने पिता या माता से कहे कि जो कुछ तुझे
मुझ से लाभ पहुँच सकता था वह कुरबान अर्थात् संकल्प
हो चुका १२ तो तुम उस को उस के पिता या उस की माता
के लिए और कुछ करने नहीं देते । १३ सो तुम अपनी रीतों
से जिन्हें तुम ने ठहराया है परमेश्वर का वचन टाल देते हो
और ऐसे ऐसे बहुतेरे काम करते हो । १४ और उसने लोगों
को अपने पास बुलाकर उन से कहा तुम सब मेरी सुनो और
समझो । १५ ऐसी तो कोई वस्तु नहीं जो मनुष्य में बाहर
से समाकर अशुद्ध करे पर जो वस्तुएं मनुष्य के भीतर से
निकलती हैं वे ही उसे अशुद्ध करती हैं । १७ जब वह भी[illegible]

के पास से घर में गया तो उस के चेलों ने इस दृष्टान्त के
विषय में उस से पूछा। १८ उस ने उन से कहा क्या तुम भी
ऐसे ना समझ हो क्या तुम नहीं समझते कि जो वस्तु बाहर से
मनुष्य में समाती है वह उसे अशुद्ध नहीं कर सकती।
१९ क्योंकि वह उस के मन में नहीं पर पेट में जाती है और
संडास में निकल जाती है। यह कह कर उस ने सब भोजन
वस्तुओं को शुद्ध ठहराया। २० फिर उस ने कहा जो मनुष्य में
से निकलता है वही मनुष्य को अशुद्ध करता है २१ क्योंकि
भीतर से अर्थात् मनुष्य के मन से बुरी बुरी चिन्ता व्यभिचार
चोरी खून परस्त्रीगमन, २२ लोभ दुष्टता छल लुचपन कुदृष्टि
निन्दा अभिमान और मूर्खता निकलती हैं। २३ ये सब बुरी
बातें भीतर से निकलतीं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।

२४ फिर वह वहां से उठ कर सूर और सैदा के देशों में
आया और किसी घर में गया और चाहता था कि कोई न
जाने पर वह छिप न सका। २५ पर तुरन्त एक स्त्री जिस की
छोटी बेटी में अशुद्ध आत्मा था उस की चरचा सुन कर आई
और उस के पांवों पर गिरी। २६ यह यूनानी और सूरु-
फिनीकी जात की थी और उस ने उससे बिनती की कि मेरी
बेटी में से दुष्टात्मा निकाल दे। २७ उस ने उस से कहा
पहिले लड़कों को तृप्त होने दे क्योंकि लड़कों की रोटी लेकर
कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं है। २८ उस ने उस को
उत्तर दिया कि सच है प्रभु तौभी कुत्ते भी मेज के नीचे

बालकों की रोटी का चूर चार खा लेते हैं। २९ उस ने उस
से कहा इस बात के कारण चली जा दुष्टात्मा तेरी बेटी से
निकल गया है। ३० सो उसने अपने घर आकर देखा कि
लड़की खाट पर पड़ी है और दुष्टात्मा निकल गया है॥

३१ फिर वह सूर और सैदा के देशों से निकल कर दिक-
पुलिस देश से होता हुआ गलील की झील पर पहुँचा।
३२ और लोगों ने एक बहिरे को जो हकला भी था उस के
पास लाकर उस से बिनती की कि अपना हाथ इस पर
रख। ३३ तब वह उस को भीड़ से अलग ले गया और
अपनी उंगलियां उस के कानों में डालीं और थूक कर उस
की जीभ छुई। ३४ और स्वर्ग की ओर देख कर आह भरी
और उस से कहा इप्फत्तह अर्थात् खुल जा। ३५ और उस
के कान खुल गये और उस की जीभ की गांठ भी खुल गई
और वह साफ़ साफ़ बोलने लगा। ३६ तब उस ने उन्हें
चिताया कि किसी से न कहना पर जितना उस ने उन्हें
चिताया उतना ही और प्रचार करने लगे। ३७ और वे बहुत
ही चकित होकर कहने लगे उस ने सब कुछ अच्छा किया है
वह बहिरों को सुनने और गूंगों को बोलने की शक्ति देता है॥

८. उन दिनों में जब फिर बड़ी भीड़ हुई और उस
के पास कुछ खाने को न था तो उस ने अपने
चेलों को बुला कर उन से कहा। २ मुझे इस भीड़ पर
तरस आता है क्योंकि यह तीन दिन से बराबर मेरे साथ हैं

और उन के पास कुछ खाने को नहीं। ३ यदि मैं उन्हें भूखे
घर भेज दूं तो मार्ग में थक कर रह जाएंगे क्योंकि इन में से
कोई कोई दूर से आए हैं। ४ उस के चेलों ने उस को उत्तर
दिया कि यहां जंगल में इतनी रोटी कोई कहां से लाये कि ये
तृप्त हों। ५ उस ने उन से पूछा तुम्हारे पास कितनी रोटियां
हैं उन्हों ने कहा सात। ६ तब उस ने लोगों को भूमि पर
बैठने की आज्ञा दी और वे सात रोटियां लीं और धन्यवाद
करके तोड़ीं और अपने चेलों को देता गया कि उन के आगे
रक्खें और उन्हों ने लोगों के आगे रख दीं। ७ उन के पास
थोड़ी सी छोटी मछलियां भी थीं और उस ने धन्यवाद करके
उन्हें भी लोगों के आगे रखने की आज्ञा की। ८ सो वे
खाकर तृप्त हुए और बचे हुए टुकड़ों के सात टोकरे भरकर
उठाए। ९ और लोग चार हज़ार के लगभग थे और उस ने
उन को विदा किया। १० और वह तुरन्त अपने चेलों के
साथ नाव पर चढ़ कर दलमनूता देश में गया॥

११ और फरीसी निकल कर उस से पूछ पाछ करने लगे
और उस के परखने के लिए उस से कोई आकाश का चिन्ह
मांगा। १२ उस ने अपने आत्मा में आह मार कर कहा इस
समय के लोग क्यों चिन्ह ढूंढ़ते हैं मैं तुम से सच कहता हूं
कि इस समय के लोगों को कोई चिन्ह न दिया जाएगा।
१३ और वह उन्हें छोड़कर फिर नाव पर चढ़ा और पार
चला गया॥

१४ और वे रोटी लेना भूल गए थे और नाव में उनके
पास एक ही रोटी थी। १५ और उस ने उन्हें चिताया कि
देखो फरीसियों के खमीर और हेरोदेस के खमीर से चौकस
रहो। १६ वे आपस में विचार करने और कहने लगे कि
हमारे पास रोटी नहीं। १७ यह जानकर यीशु ने उन से कहा
तुम क्यों आपस में विचार करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं
क्या अब तक नहीं जानते और नहीं समझते क्या तुम्हारा मन
कठोर हो गया। १८ क्या आंखे रखते नहीं देखते और कान
रखते नहीं सुनते और तुम्हें स्मरण नहीं कि १९ जब मैं ने पांच
हज़ार के लिए पांच रोटी तोड़ीं तो तुम ने टुकड़ों की कितनी
टोकरी भरकर उठाईं उन्हों ने उस से कहा बारह। २० और
जब चार हज़ार के लिए सात रोटी तो तुम ने टुकड़ों के कितने
टोकरे भरकर उठाए थे। २१ उन्हों ने उस से कहा सात।
उस ने उन से कहा क्या तुम अब तक नहीं समझते॥

२२ और वे बैतसैदा में आए और लोग एक अन्धे को
उस के पास लाए और उस से बिनती किई कि उस को
छूए। २३ वह उस अन्धे का हाथ पकड़कर उसे गांव के
बाहर ले गया और उस की आंखों पर थूक कर उस पर हाथ
रक्खे और उस से पूछा क्या तू कुछ देखता है। २४ उस ने
आंख उठा कर कहा मैं मनुष्यों को देखता हूं क्योंकि वे मुझे
चलते हुए दिखाई देते हैं जैसे पेड़। २५ तब उस ने फिर
उस की आंखों पर हाथ रक्खे और उस ने ध्यान से देखा

आैर अच्छा हो गया और सब कुछ साफ़ साफ़ देखने लगा।
२६ और उस ने उस से यह कह कर घर भेजा कि इस गांव
के भीतर पांव न रखना॥

२७ यीशु और उस के चेले कैसरिया फ़िलिप्पी के गांवों
में चले गए तो मार्ग में उस ने अपने चेलों से पूछा कि लोग
मुझे क्या कहते हैं। २८ उन्हों ने उत्तर दिया कि यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाला पर कोई कोई एलियाह और कोई
कोई नबियों में से एक भी कहते हैं। २९ उस ने उन से
पूछा फिर तुम मुझे क्या कहते हो। पतरस ने उस को उत्तर
दिया तू मसीह है। ३० तब उस ने उन्हें चिताकर कहा कि
मेरे विषय में यह किसी से न कहना। ३१ और वह उन्हें
सिखाने लगा कि मनुष्य के पुत्र के लिए अवश्य है कि वह
बहुत दुख उठाए और पुरनिए और महायाजक और शास्त्री
उसे तुच्छ समझकर मार डालें और वह तीन दिन के पीछे
जी उठे। उस ने यह बात साफ़ साफ़ कही। ३२ इस पर
पतरस उसे अलग ले जाकर उस को झिड़कने लगा।
३३ उस ने फिर कर और अपने चेलों की ओर देख कर
पतरस को झिड़क कर कहा कि हे शैतान मेरे सामने से दूर
हो क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं पर मनुष्यों की
बातों पर मन लगाता है। ३४ उस ने भीड़ को अपने चेलों
समेत पास बुला कर उन से कहा जो कोई मेरे पीछे आना
चाहे वह अपने आपे को नकारे और अपना क्रूस उठा कर

मेरे पीछे हो ले। ३५ क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना
चाहे वह उसे खोएगा पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के
लिए अपना प्राण खोएगा वह उसे बचाएगा। ३६ यदि मनुष्य
सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए
तो उसे क्या लाभ होगा। ३७ या मनुष्य अपने प्राण के बदले
क्या देगा। ३८ जो कोई इस व्यभिचारी और पापी जाति
के बीच मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा मनुष्य का पुत्र
भी जब वह पवित्र दूतों के साथ अपने पिता की महिमा
९ सहित आएगा तब उस से भी लजाएगा। और
1. उस ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि
जो यहां खड़े हैं उन में से कोई कोई ऐसे हैं कि जब तक
परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें
तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे॥

२ छः दिन के पीछे यीशु ने पतरस और याकूब और
यूहन्ना को साथ लिया और एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़
पर ले गया और उन के सामने उस का रूप बदल गया।
३ और उस का वस्त्र चमकने लगा और यहां तक बहुत
उजला हुआ कि पृथिवी पर कोई धोबी उजला नहीं कर
सकता। ४ और उन्हें मूसा के साथ एलियाह दिखाई दिया
और वे यीशु के साथ बातें करते थे। ५ इस पर पतरस ने
यीशु से कहा हे रब्बी हमारा यहां रहना अच्छा है सो हम

तीन मण्डप बनाएं एक तेरे लिए एक मूसा के लिए और एक
एलिय्याह के लिए । ६ वह न जानता था कि क्या कहे क्योंकि
वे बहुत डर गए थे । ७ तब एक बादल ने उन्हें छा लिया
और उस बादल में से यह शब्द निकला कि यह मेरा प्रिय
पुत्र है उस की सुनो । ८ तब उन्हों ने एकाएक चारों ओर दृष्टि
की और यीशु को छोड़ अपने साथ और किसी को न देखा ॥

९ पहाड़ से उतरते हुए उस ने उन्हें आज्ञा दी कि जब
तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे तब तक जो
कुछ तुम ने देखा है वह किसी से न कहना । १० वे यह
बात अपने जी में रखकर आपस में पूछ पाछ करने लगे कि मरे
हुओं में से जी उठना क्या है । ११ और उन्हों ने उस से
पूछा शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहिले आना
अवश्य है । १२ उस ने उन्हें उत्तर दिया कि एलिय्याह
सचमुच पहिले आकर सब कुछ सुधारेगा । फिर मनुष्य के
पुत्र के विषय में यह क्यों लिखा है कि वह बहुत दुख
उठाएगा और तुच्छ गिना जाएगा । १३ पर मैं तुम से कहता
हूं कि एलिय्याह तो आ चुका और जैसा उस के विषय में
लिखा है उन्हों ने जो कुछ चाहा उस के साथ किया ॥

१४ और जब वह चेलों के पास आया तो देखा कि
उन के चारों ओर बड़ी भीड़ लगी है और शास्त्री उन के
साथ विवाद कर रहे हैं । १५ और उसे देखते ही सब
चकित हो गए और उस की ओर दौड़कर उसे नमस्कार करने

लगे । १६ उस ने उन से पूछा तुम इन से क्या पूछ पाछ
कर रहे हो । १७ भीड़ में से एक ने उत्तर दिया कि हे गुरु
मैं अपने पुत्र को जिस में गूंगा आत्मा समाया है तेरे पास
लाया था । १८ जहां कहीं वह उसे पकड़ता वहीं पटक देता
है और वह मुंह में फेन भर लाता और दांत पीसता और
सूखा जाता है और मैं ने तेरे चेलों से कहा था कि वे उसे
निकाल दें परन्तु उन से न हो सका । १९ यह सुन उस ने
उन से उत्तर देके कहा कि हे अविश्वासी लोगों मैं कब
तक तुम्हारे साथ रहूंगा और कब तक तुम्हारी सहूंगा ।
२० उसे मेरे पास लाओ । तब वे उसे उस के पास ले आए
और जब उस ने उसे देखा तो उस आत्मा ने तुरन्त उसे
मरोड़ा और वह भूमि पर गिरा और मुंह से फेन बहाते
हुए लोटने लगा । २१ उस ने उस के पिता से पूछा इस का
यह हाल कब से है । २२ उस ने कहा बचपन से । उस ने
इसे नाश करने के लिये कभी आग और कभी पानी में
गिराया पर यदि तू कुछ कर सके तो हम पर तरस खाकर
हमारा उपकार कर । २३ यीशु ने उस से कहा यदि तू कर
सकता है यह क्या बात है । २४ विश्वास करनेवाले के
लिए सब कुछ हो सकता है । बालक के पिता ने तुरन्त
गिड़गिड़ाकर कहा हे प्रभु मैं विश्वास करता हूं मेरे अविश्वास
का उपाय कर । २५ जब यीशु ने देखा कि लोग दौड़ कर भीड़

जाते हैं तो उस ने अशुद्ध आत्मा को यह कहकर डांटा
कि हे गूंगे और बहिरे आत्मा मैं तुझे आज्ञा देता हूं उस में
से निकल आ और उसमें फिर कभी न पैठ । २६ तब वह
चिल्लाकर और उसे बहुत मरोड़कर निकल आया और बालक
मरा हुआ सा हो गया यहां तक कि बहुत लोग कहने लगे
वह मर गया । २७ पर यीशु ने उस का हाथ पकड़ के उसे
उठाया और वह खड़ा हो गया । २८ जब वह घर में आया
तो उसके चेलों ने एकान्त में उस से पूछा हम उसे क्यों न
निकाल सके । २९ उस ने उन से कहा कि यह जाति बिना
प्रार्थना किसी और उपाय से निकल नहीं सकती ॥

३० फिर वे वहां से चल निकले और गलील होकर जा
रहे थे और वह न चाहता था कि कोई जाने । ३१ क्योंकि वह
अपने चेलों को उपदेश देता और उन से कहता था कि
मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा और वे
उसे मार डालेंगे और वह मरने के तीन दिन पीछे जी
उठेगा । ३२ पर यह बात उन की समझ में न आई और वे
उस से पूछने से डरते थे ॥

३३ फिर वे कफरनहूम में आए और घर में आकर उस
ने उन से पूछा रास्ते में तुम किस बात का विवाद करते थे ।
३४ वे चुप रहे क्योंकि मार्ग में उन्हों ने आपस में यह वाद
विवाद किया था कि हम में से बड़ा कौन है । ३५ तब उस
ने बैठकर बारहों को बुलाया और उनसे कहा यदि कोई बड़ा

होना चाहे तो सब से छोटा और सब का सेवक बने । ३६ और
उस ने एक बालक को लेकर उन के बीच में खड़ा किया और
उसे गोद में ले उन से कहा । ३७ जो कोई मेरे नाम से ऐसे
बालकों में से एक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता
है और जो कोई मुझे ग्रहण करता वह मुझे नहीं बरन मेरे
भेजनेवाले को ग्रहण करता है ॥

३८ तब यूहन्ना ने उस से कहा हे गुरु हम ने एक
मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा और
हम उसे मना करने लगे क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं हो लेता
था । ३९ यीशु ने कहा उस को मत मना करो क्योंकि ऐसा
कोई नहीं जो मेरे नाम से सामर्थ का काम करे और जल्दी से
मुझे बुरा कह सके । ४० इस लिये कि जो हमारे विरोध में
नहीं वह हमारी ओर है । ४१ जो कोई एक कटोरा पानी
तुम्हें इस लिये पिलाए कि तुम मसीह के हो मैं तुम से सच
कहता हूँ कि वह अपना प्रतिफल किसी रीति से न खोएगा ।
४२ पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते
हैं किसी को ठोकर खिलाए उस के लिये भला होता कि एक
बड़ी चक्की का पाट उस के गले में लटकाया जाए और वह
समुद्र में डाल दिया जाए । ४३ यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर
खिलाए तो उसे काट डाल टुण्डा हो कर जीवन में प्रवेश
करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ रहते नरक के बीच

उस आग में डाला जाए जो कभी बुझने की नहीं । ४५ और
यदि तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाये तो उसे काट डाल ।
४६ लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से
भला है कि दो पांव रहते नरक में डाला जाए । ४७ और यदि
तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल । काना
होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इस से
भला है कि दो आंख रहते नरक में डाला जाए । ४८ जहां
उन का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती । ४९ क्योंकि
हर एक जन आग से नमकीन किया जाएगा । ५० नमक
अच्छा है पर यदि नमक की नमकीनी जाती रहे तो उसे
किस से स्वादित करोगे । अपने में नमक रखो और आपस
में मेल मिलाप से रहो ॥

१० फिर वह वहां से उठ कर यहूदिया के सिवानों
में और यरदन के पार आया और भीड़ उस
के पास फिर इकट्ठी हो गई और वह अपनी रीति के अनुसार
उन्हें फिर उपदेश देने लगा । २ तब फरीसियों ने उस के पास
आकर उसकी परीक्षा करने को उस से पूछा क्या यह उचित है
कि पुरुष अपनी पत्नी को त्यागे । ३ उस ने उन को उत्तर
दिया कि मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है । ४ उन्हों ने कहा
मूसा ने त्याग पत्र लिखने और त्यागने दिया । ५ यीशु ने
उन से कहा कि तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उस ने
तुम्हारे लिये यह आज्ञा लिखी । ६ पर सृष्टि के आरम्भ से

परमेश्वर ने नर और नारी करके उन को बनाया । ७ इस
कारण मनुष्य अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी
के साथ रहेगा। और वे दोनों एक तन होंगे । ८ सो वे अब
दो नहीं पर एक तन हैं । ९ इस लिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा
है उसे मनुष्य अलग न करे १० और घर में चेलों ने इस के
विषय में उस से फिर पूछा । ११ उस ने उन से कहा जो कोई
अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से ब्याह करे वह उस पहिली के
विरोध में व्यभिचार करता है । १२ और यदि स्त्री अपने पति
को छोड़कर दूसरे से ब्याह करे तो वह व्यभिचार करती है ॥

१३ फिर लोग बालकों को उस के पास लाने लगे कि
वह उन पर हाथ रखे पर चेलों ने उन को डांटा । १४ यीशु
ने यह देख रिसियाकर उन से कहा बालकों को मेरे पास
आने दो और उन्हें मना न करो क्योंकि परमेश्वर का राज्य
ऐसों ही का है । १५ मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई
परमेश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे वह
उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा । १६ और उस ने उन्हें
गोद में लिया और उन पर हाथ रख कर उन्हें आशीष दी ॥

१७ और जब वह निकलकर मार्ग में जाता था तो
एक मनुष्य उस के पास दौड़ता हुआ आया और उस के
आगे घुटने टेककर उस से पूछा हे उत्तम गुरु अनन्त
जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूं । १८ यीशु
ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है । कोई उत्तम

नहीं केवल एक अर्थात् परमेश्वर। १९ तू आज्ञाओं को
तो जानता है ख़ून न करना, व्यभिचार न करना चोरी न
करना, झूठी गवाही न देना, ठगाई न करना, अपने पिता
और अपनी माता का आदर करना। २० उस ने उस से
कहा हे गुरु इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूं।
२१ यीशु ने उस पर दृष्टि कर उस से प्रेम किया और उस से
कहा तुझ में एक बात की घटी है। जा जो कुछ तेरा है उसे
बेच कर कंगालों को दे और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा और
आकर मेरे पीछे हो ले। २२ इस बात से उस के चिहरे पर
उदासी छा गई और वह शोक करता हुआ चला गया क्योंकि
वह बहुत धनी था॥

२३ यीशु ने चारों ओर देख कर अपने चेलों से कहा
धनवानों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन
है। २४ चेले उस की बातों से अचम्भित हुए इस पर यीशु
ने फिर उनको उत्तर दिया हे बालको जो धन पर भरोसा
रखते हैं उन के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा
कठिन है। २५ परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने
से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है। २६ वे
बहुत ही चकित होकर आपस में कहने लगे तो किस का
उद्धार हो सकता है। २७ यीशु ने उन की ओर देखकर कहा
मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता परन्तु परमेश्वर से हो
सकता है, क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।

२८ पतरस उस से कहने लगा कि देख हम तो सब कुछ
छोड़कर तेरे पीछे हो लिए हैं। २९ यीशु ने कहा मैं तुम
से सच कहता हूँ कि ऐसा कोई नहीं जिस ने मेरे और
सुसमाचार के लिए घर या भाइयों या बहिनों या माता या
पिता या लड़के बालों या खेतों को छोड़ दिया हो ३० और
अब इस समय सौ गुना न पाए घरों और भाइयों और
बहिनों और माताओं और लड़के बालों और खेतों को पर
उपद्रव के साथ और परलोकमें अनन्त जीवन। ३१ पर बहुतेरे
जो पहले हैं पिछले होंगे और जो पिछले हैं पहिले होंगे॥

३२ और वे यरूशलेम को जाते हुए मार्ग में थे और
यीशु उन के आगे आगे चल रहा था और वे अचम्भित हुए
और उस के पीछे चलते हुए डरते थे और वह फिर बारहों को
लेकर उन से वे बातें कहने लगा जो उस पर आनेवाली
थीं। ३३ कि देखो हम यरूशलेम को जाते हैं और मनुष्य
का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा
और वे उस को घात के योग्य ठहराएंगे और अन्य जातियों
के हाथ सौंपेंगे। ३४ और वे उस को ठट्ठों में उड़ाएंगे और
उस पर थूकेंगे और उसे कोड़े मारेंगे और उसे घात करेंगे
और तीन दिन के पीछे वह जी उठेगा॥

३५ तब जबदी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने उस के पास
आकर कहा हे गुरु हम चाहते हैं कि जो कुछ हम तुमसे मांगें
वही तू हमारे लिए करे। ३६ उस ने उन से कहा तुम क्या

चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूं। ३७ उन्होंने उससे कहा
कि हमें यह दे कि तेरी महिमा में हम में से एक तेरे दहिने
और दूसरा तेरे बाएं बैठे। ३८ यीशु ने उनसे कहा तुम नहीं
जानते कि क्या मांगते हो। जो कटोरा मैं पीने पर हूं क्या
पी सकते हो और जो बपतिसमा मैं लेने पर हूं क्या ले
सकते हो। ३९ उन्होंने उससे कहा हमसे हो सकता है यीशु
ने उन से कहा जो कटोरा मैं पीने पर हूं तुम पीओगे और
जो बपतिसमा मैं लेने पर हूं उसे लोगे। ४० पर जिन के
लिये तैय्यार किया गया है उन्हें छोड़ और किसी को अपने
दहिने और अपने बाएं बिठाना मेरा काम नहीं। ४१ यह
सुन कर दसों याकूब और यूहन्ना पर रिसियाने लगे। ४२
और यीशु ने उनको पास बुला कर उनसे कहा तुम जानते
हो कि जो अन्य जातियों के हाकिम समझे जाते हैं वे उनपर
प्रभुता करते हैं और उनमें जो बड़े हैं उनपर अधिकार जताते
हैं। ४३ पर तुम में ऐसा नहीं है पर जो कोई तुम में बड़ा
होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने। ४४ और जो कोई तुम
में प्रधान होना चाहे वह सब का दास बने। ४५ क्योंकि
मनुष्य का पुत्र इस लिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल
की जाय पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे और
बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे।

४६ और वे यरीहो में आए और जब वह और उस के
चेले और एक बड़ी भीड़ यरीहो से निकलती थी तो तिमई
का पुत्र बरतिमाई एक अन्धा भिखारी सड़क के किनारे बैठा
था। ४७ वह यह सुन कर कि यीशु नासरी है पुकार पुकार
कर कहने लगा कि हे दाऊद के सन्तान यीशु मुझ पर दया
कर। ४८ बहुतों ने उसे डांटा कि चुप रहे पर वह और भी
पुकारने लगा हे दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कर।
४९ तब यीशु ने ठहर कर कहा उसे बुलाओ और लोगों ने
उस अन्धे को बुलाकर उस से कहा ढाढ़स बान्ध उठ वह तुझे
बुलाता है। ५० वह अपना कपड़ा फेंक कर शीघ्र उठा और
यीशु के पास आया। ५१ इस पर यीशु ने उस से कहा तू
क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं अन्धे ने उस से कहा
हे रब्बी मैं देखने लगूं। ५२ यीशु ने उस से कहा चला जा
तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है। और वह तुरन्त
देखने लगा और मार्ग में उस के पीछे हो लिया।

११ जब वे यरूशलीम के निकट जैतून पहाड़ पर बैतफगे
और बैतनिय्याह के पास आए तो उस ने अपने
चेलों में से दो को यह कह कर भेजा। २ कि अपने सामने
के गांव में जाओ और उसमें पहुँचते ही एक गदही का बच्चा
जिस पर कभी कोई नहीं चढ़ा बंधा हुआ तुम्हें मिलेगा उसे
खोल लाओ। ३ यदि तुम से कोई पूछे यह क्यों करते हो
तो कहना कि प्रभु को इस का प्रयोजन है और वह शीघ्र

उसे लौटा देगा । ४ उन्होंने जाकर उस बच्चे को बाहर द्वार के
पास चौक में बन्धा हुआ पाया और खोलने लगे । ५ और उन
में से जो वहां खड़े थे कोई कोई कहने लगे कि बच्चे को क्यों
खोलते हो । ६ उन्हों ने जैसा यीशु ने कहा था वैसा ही
उन से कह दिया तब उन्हों ने उन्हें जाने दिया । ७ और
उन्हों ने बच्चे को यीशु के पास लाकर उस पर अपने कपड़े
डाले और वह उस पर बैठ गया । ८ और बहुतों ने अपने कपड़े
मार्ग में बिछाए और औरों ने खेतों में से डालियां काट काट
कर फैला दीं । ९ और जो उस के आगे आगे जाते और पीछे
पीछे चले आते थे पुकार पुकार कर कहते जाते थे होशाना
धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है । १० हमारे पिता
दाऊद का आनेवाला राज्य धन्य है आकाश में होशाना ॥
११ और वह यरूशलेम पहुँचकर मन्दिर में आया और
चारों ओर सब वस्तुओं को देखकर बारहों के साथ बैतनिय्याह
गया क्योंकि सांझ हो गई थी ॥
१२ दूसरे दिन जब वे बैतनिय्याह से निकलते थे तो
उस को भूख लगी । १३ और वह दूर से अंजीर का एक हरा
पेड़ देखकर निकट गया कि क्या जाने उस में कुछ पाए पर
पत्तों को छोड़ कुछ न पाया क्योंकि फल का समय न था ।
१४ इस पर उस ने उस से कहा अब से कोई तेरा फल कभी
न खाए । और उस के चेले सुन रहे थे ॥

१५ वे यरूशलेम में आए और वह मन्दिर में गया और
वहां जो लेन देन कर रहे थे उन्हें बाहर निकालने लगा और
सर्राफों के पीढ़े और कबूतर के बेचने वालों की चौकियां उलट
दीं । १६ और मन्दिर में से होकर किसी को बरतन लेकर
आने जाने न दिया । १७ और उपदेश करके उन से कहा क्या
यह नहीं लिखा कि मेरा घर सब जातियों के लिये प्रार्थना का
घर कहलाएगा । पर तुम ने इसे डाकुओं की खोह बना दी
है । १८ यह सुन महायाजक और शास्त्री उस के नाश करने
का अवसर ढूंढ़ने लगे क्योंकि उस से डरते थे इस लिये कि
सब लोग उस के उपदेश से चकित होते थे ॥

१९ और सांझ होते ही वह नगर से बाहर जाया करता
था । २० भोर को जब वे उधर से जाते थे तो उन्हों ने उस
अंजीर के पेड़ को जड़ तक सूखा हुआ देखा । २१ पतरस को
वह बात स्मरण आई और उसने उससे कहा हे रब्बी देख यह
अंजीर का पेड़ जिसे तू ने श्राप दिया था सूख गया । २२ यीशु
ने उस को उत्तर दिया कि परमेश्वर पर विश्वास रक्खो ।
२३ मैं तुम से सच कहता हूं कोई इस पहाड़ से कहे कि
उखड़ जा और समुद्र में जा पड़ और अपने मन में सन्देह
न करे वरन प्रतीति करे कि जो कहता हूं वह हो जाएगा तो
उस के लिये वही होगा। २४ इस लिये मैं तुम से कहता हूं
कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो प्रतीति कर लो कि तुम्हें
मिल गया और तुम्हारे लिये हो जायगा । २५ और जब तुम

खड़े हुए प्रार्थना करते हो तो यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर कुछ विरोध हो तो क्षमा करो इस लिये कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे॥

२७ वे फिर यरूशलेम में आए और जब वह मन्दिर में
फिर रहा था तो महायाजक और शास्त्री और पुरनिये उस
के पास आकर पूछने लगे। २८ तू ये काम किस अधिकार से
करता है और यह अधिकार तुझे किस ने दिया है कि ये
काम करे। २९ यीशु ने उन से कहा कि मैं भी तुम से एक
बात पूछता हूं मुझे उत्तर दो तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि ये
काम किस अधिकार से करता हूँ। ३० यूहन्ना का बपतिसमा
क्या स्वर्ग की ओर से था मनुष्यों की ओर से था मुझे उत्तर दो
३१ तब वे आपस में विवाद करने लगे कि यदि हम कहें
स्वर्ग की ओर से तो वह कहेगा फिर तुम ने उस की प्रतीति
क्यों न की। ३२ पर यदि हम कहें मनुष्यों की ओर से—उन्हें
लोगों का डर था क्योंकि सब जानते थे कि यूहन्ना सचमुच
नबी था। ३३ सो उन्होंने यीशु को उत्तर दिया कि हम नहीं
जानते। यीशु ने उन से कहा मैं भी तुम को नहीं बताता
कि ये काम किस अधिकार से करता हूं॥

१२. फिर वह दृष्टान्तों में उन से बातें करने लगा।
किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई और उस
के चारों ओर बाड़ा बान्धा और रस का कुंड खोदा और
गुम्मट बनाया और किसानों को उस का ठीका देकर परदेश

चला गया। २ समय पर उस ने किसानों के पास एक दास
को भेजा कि किसानों से दाख की बारी के फलों का भाग ले
३ पर उन्हों ने उसे पकड़ कर पीटा और छूछे हाथ लौटा
दिया। ४ फिर उसने एक और दास को उन के पास भेजा
और उन्हों ने उस का सिर फोड़ उस का अपमान किया।
५ फिर उस ने एक और को भेजा और उन्हों ने उसे मार
डाला और बहुत औरों को भेजा उन में से उन्हों ने कितनों
को पीटा और कितनों को मार डाला। ६ अब एक ही रह
गया था जो उस का प्रिय पुत्र था अन्त में उसने उसे भी उन
के पास यह सोच कर भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे।
७ पर उन किसानों ने आपस में कहा यह तो वारिस है आओ
हम उसे मार डालें तब मीरास हमारी होगी। ८ और उन्हों
ने उसे पकड़कर मार डाला और दाख की बारी के बाहर फेंक
दिया। ९ इस लिये दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा।
वह आकर उन किसानों को नाश करेगा और दाख की बारी
औरों के हाथ देगा। १० क्या तुम ने पवित्र शास्त्र में यह
वचन नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को राजों ने निकम्मा
ठहराया था वही कोने का सिरा हो गया। ११ यह प्रभु
की ओर से हुआ और हमारे देखने में अद्भुत है। १२ तब
उन्हों ने उसे पकड़ना चाहा क्योंकि समझ गए थे कि उस ने
हमारे विरोध में यह दृष्टान्त कहा है पर वे लोगों से डरे और
उसे छोड़ कर चले गये॥

१३ तब उन्होंने उसे बातों में फंसाने के लिये कई एक
फरीसियों और हेरोदियों को उसके पास भेजा । १४ और
उन्होंने आकर उस से कहा हे गुरु हम जानते हैं कि तू सच्चा
है और किसी की परवा नहीं करता क्योंकि तू मनुष्यों का
मुंह देख कर बातें नहीं करता परन्तु परमेश्वर का मार्ग सच्चाई
से बताता है । १५ क्या कैसर को कर देना उचित है
कि नहीं । हम दें या न दें । उस ने उन का कपट जानकर
उन से कहा मुझे क्यों परखते हो एक दीनार मेरे पास लाओ
कि मैं देखूं । १६ वे लाए और उस ने उन से कहा यह मूर्ति
और नाम किस का है उन्होंने कहा कैसर का । १७ यीशु ने
उन से कहा जो कैसर का है वह कैसर को और जो परमेश्वर
का है परमेश्वर को दो । तब वे उस से बहुत अचम्भा करने
लगे ।

१८ सदूकी ने भी जो कहते हैं कि मरे हुओं का जी
उठना है ही नहीं उसके पास आए और उस से पूछा १९ कि
हे गुरु मूसा ने हमारे लिये लिखा कि यदि किसी का भाई
बिना सन्तान मर जाए और उस की पत्नी रह जाए तो उस
का भाई उस की पत्नी को ब्याह ले और अपने भाई के लिये
वंश उत्पन्न करे । सात भाई थे । २० पहिला भाई ब्याह करके
बिना सन्तान मर गया । २१ तब दूसरे भाई ने उस स्त्री को
ब्याह लिया और बिना सन्तान मर गया और वैसे ही तीसरे
ने भी । २२ और सातों से सन्तान न हुआ । सब के पीछे

वह स्त्री भी मर गई। २३ सो जी उठने पर वह उन में से
किस की पत्नी होगी क्योंकि वह सातों की पत्नी हुई थी। २४
यीशु ने उन से कहा क्या तुम इस कारण भूल में न पड़े हो
कि तुम पवित्र शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ नहीं जानते।
२५ क्योंकि जब वे मरे हुओं में से जी उठेंगे तो उन में ब्याह
शादी न होगी पर स्वर्ग में दूतों की नाईं होंगे। २६ मरे हुओं
के जी उठने के विषय क्या तुमने मूसा की पुस्तक में झाड़ी
की कथा में नहीं पढ़ा कि परमेश्वर ने उससे कहा मैं इब्राहीम
का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर और याकूब का पर-
मेश्वर हूं। २७ परमेश्वर मरे हुओं का नहीं वरन् जीवतों का
परमेश्वर है सो तुम बड़ी भूल में पड़े हो।

२८ शास्त्रियों में से एक ने आकर उन्हें पूछ पाछ करते
सुना और यह जानकर कि उस ने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर
दिया उस से पूछा सब से मुख्य आज्ञा कौन है २९ यीशु ने
उसे उत्तर दिया सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है कि हे इस्रा-
ईल सुन प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है। ३० और तू
प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे
जीव से और अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से
प्रेम रखना। ३१ और दूसरी यह है कि तू अपने पड़ोसी से
अपने समान प्रेम रखना। इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं
३२ शास्त्री ने उस से कहा हे गुरु बहुत ठीक तू ने सच कहा
कि वह एक ही है और उसे छोड़ और कोई नहीं। ३३ और

उस से सारे मन और सारी बुद्धि और सारे जीव और सारी
शक्ति के साथ प्रेम रखना और पड़ोसी से अपने समान प्रेम
रखना सारे होमों और बलिदानों से बढ़कर है। ३४ जब
यीशु ने देखा कि उस ने समझ से उत्तर दिया तो उस से
कहा तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं। और किसी को फिर
उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ॥

३५ फिर यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए कहा
शास्त्री क्योंकर कहते हैं कि मसीह दाऊद का पुत्र है। ३६
दाऊद ने आपही पवित्र आत्मा में होकर कहा कि प्रभु ने मेरे
प्रभु से कहा मेरे दहिने बैठ जब तक कि मैं तेरे बैरियों को
तेरे पांवों की पीढ़ी न कर दूं। ३७ दाऊद तो आप ही उसे
प्रभु कहता है फिर वह उस का पुत्र कहां से ठहरा। भीड़ के
लोग उस की आनन्द से सुनते थे॥

३८ उस ने अपने उपदेश में उन से कहा शास्त्रियों से
चौकस रहो जो लम्बे वस्त्र पहिने हुए फिरना ३९ और
बाजारों में नमस्कार और सभाओं में मुख्य मुख्य आसन
और जेवनारों में मुख्य मुख्य जगहें भी चाहते हैं।
४० वे विधवाओं के घर खा जाते हैं और दिखाने के लिए
बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं। ये बहुत दण्ड पाएंगे॥

४१ और वह भण्डार के सामने बैठ कर देख रहा था
कि लोग क्योंकर भण्डार में पैसे डालते थे और बहुत धन-
वानों ने बहुत कुछ डाला। ४२ और एक कंगाल विधवा ने

आकर दो दमड़ी जो एक अधेले के बराबर होता है डाला ।
४३ तब उस ने अपने चेलों को पास बुला कर उन से कहा
मैं तुम से सच कहता हूं कि भण्डार में डालनेवालों में से
इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है । ४४ क्योंकि
सब ने अपनी बढ़ती में से कुछ कुछ डाला है पर इस ने
अपनी घटी में से जो कुछ उस का था अर्थात् अपनी सारी
जीविका डाल दी है ॥

१३. जब वह मन्दिर से निकल रहा था तो उस के
चेलों में से एक ने उस से कहा हे गुरु देख
कैसे कैसे पत्थर और कैसे कैसे भवन हैं । २ यीशु ने उस से
कहा क्या तुम ये बड़े बड़े भवन देखते हो । यहां पत्थर पर
पत्थर भी न छूटेगा जो ढाया न जायगा ॥

३ जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के सामने बैठा
था तो पतरस और याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास ने
अलग जाकर उस से पूछा । ४ कि हम से कह ये बातें कब
होंगी और जब ये सब बातें पूरी होने पर होंगी उस समय
का क्या चिन्ह होगा । ५ यीशु उन से कहने लगा चौकस
रहो कि कोई तुम्हें न भरमाए । ६ बहुतेरे मेरे नाम से
आकर कहेंगे मैं वही हूं और बहुतों को भरमाएंगे । ७ जब
तुम लड़ाइयां और लड़ाइयों की चरचा सुनो तो न घबराना
क्योंकि इन का होना अवश्य है पर उस समय अन्त न होगा।
८ क्योंकि जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा

और जगह जगह भूईंडोल होंगे और अकाल पड़ेंगे यह तो
पीड़ाओं का आरम्भ होगा ॥

९ अपने विषय में चौकस रहो क्योंकि लोग तुम्हें महा-
सभाओं में सौंपेंगे और तुम पञ्चायतों में पीटे जाओगे और
मेरे लिये हाकिमों और राजाओं के आगे खड़े किए जाओगे
कि उन के सामने गवाही दो । १० पर अवश्य है कि पहले
सुसमाचार सब जातियों में प्रचार किया जाए । ११ जब वे
तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे तो पहिले से चिन्ता न करना कि हम
क्या कहेंगे पर जो कुछ तुम्हें उस घड़ी बताया जाए वही
कहना क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो पर पवित्र आत्मा ।
१२ और भाई भाई को और पिता पुत्र को घात के लिये
सौंपेंगे और लड़केवाले माता पिता के विरोध में उठकर उन्हें
मरवा डालेंगे । १३ और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम
से बैर करेंगे पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का
उद्धार होगा ॥

१४ सो जब तुम उस उजाड़नेवाली घिनित वस्तु को
जहां उचित नहीं वहां खड़ी देखो ( जो पढ़े वह समझे )
तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं । १५ जो
कोठे पर हो वह अपने घर से कुछ लेने को न नीचे उतरे
और न भीतर जाए । १६ और जो खेत में हो वह
अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे । १७ उन दिनों में जो
गर्भवती और दूध पिलाती होंगी उ.. के लिये हाय हाय ।

१८ और प्रार्थना किया करो कि यह जाड़े में न हो।
१९ क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे कि सृष्टि के आरम्भ से
जो परमेश्वर ने सृजी अब तक न हुए और न कभी होंगे।
२० और यदि प्रभु उन दिनों को न घटाता तो कोई प्राणी
न बचता पर उन चुने हुओं के कारण जिन को उस ने चुना
है उन दिनों को घटाया। २१ उस समय यदि कोई तुम से
कहे देखो मसीह यहां या देखो वहां है तो प्रतीति न करना।
२२ क्योंकि झूठे मसीह और झूठे नबी उठ खड़े होंगे और चिन्ह
और अद्भुत काम दिखाएंगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं
को भी भरमा दें। २३ पर तुम चौकस रहो। देखो मैं ने
तुम्हें सब बातें पहिले ही से कह दी हैं॥
२४ उन दिनों में उस क्लेश के पीछे सूरज अन्धेरा
हो जायगा और चांद प्रकाश न देगा। २५ आकाश से
तारे गिरेंगे और आकाश में की शक्तियां हिलाई जाएंगी।
२६ तब लोग मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ और
महिमा के साथ बादलों में आते देखेंगे। २७ और तब
वह अपने दूतों को भेजेगा और पृथिवी के इस छोर
से आकाश की उस छोर तक चारों दिशा से चुने हुओं को
इकट्ठे करेगा॥
२८ अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो। जब उस की
डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकलने लगते हैं तो
तुम जान लेते हो कि धूप काल निकट है। २९ इसी रीति

से जब तुम ये बातें होते देखो तो जान लो कि वह निकट
है बरन द्वार ही पर है । ३० मैं तुम से सच कहता हूं कि
जब तक ये सब बातें न हो लेंगी तब तक यह लोग जाते
न रहेंगे । ३१ आकाश और पृथिवी टल जाएंगे पर मेरी
बातें कभी न टलेंगी । ३२ उस दिन या उस घड़ी के विषय
में कोई नहीं जानता न स्वर्ग के दूत न पुत्र पर केवल
पिता । ३३ देखो जागते और प्रार्थना करते रहो क्योंकि
तुम नहीं जानते वह समय कब आएगा । ३४ यह उस
मनुष्य का सा हाल है जो परदेश जाते समय अपना घर
छोड़ जाए और अपने दासों को अधिकार दे और हर एक
को उस का काम जता दे और द्वारपाल को जागते रहने की
आज्ञा दे । ३५ इस लिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं
जानते घर का स्वामी कब आएगा सांझ को या आधी रात को
या मुर्ग के बांग के समय या भोर को । ३६ ऐसा न हो कि
वह अचानक आकर तुम्हें सोते पाए । ३७ और जो मैं तुम
से कहता हूं वही सब से कहता हूं जागते रहो ॥

१४. दो दिन के पीछे फसह और अखमीरी रोटी का
पर्ब्ब होनेवाला था और महायाजक और शास्त्री
इस बात की खोज में थे कि उसे क्योंकर छल से पकड़ के
मार डालें । २ पर कहते थे पर्ब्ब के दिन नहीं न हो कि
लोगों में बलवा मचे ॥

३ जब वह बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर भोजन
करने बैठा था तब एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामांसी
का बहुत मोल का चोखा अतर लेकर आई और पात्र तोड़
कर उस के सिर पर डाला। ४ कोई कोई अपने मन में
रिसियाकर कहने लगे इस अतर को क्यों सत्यानाश किया।
५ क्योंकि यह अतर तो तीन सौ दीनार से अधिक दाम
में बिककर कंगालों को बांटा जा सकता था और वे उस को
झिड़कने लगे। ६ यीशु ने कहा उसे छोड़ दो उसे क्यों
सताते हो। उस ने तो मेरे साथ भलाई की है। ७ कंगाल
तुम्हारे साथ सदा रहते हैं और तुम जब चाहो तब उन से
भलाई कर सकते हो पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूंगा।
८ जो कुछ वह कर सकी उस ने किया। उस ने मेरे गाड़े जाने
की तैयारी में पहिले से मेरी देह पर अतर डाला है। ९ मैं
तुम से सच कहता हूं कि सारे जगत में जहां कहीं सुसमाचार
प्रचार किया जाएगा वहां उस के इस काम की चरचा भी
उस के स्मरण में की जायगी॥

१० तब यहूदा इसकरियोती जो बारह में से एक था
महायाजकों के पास गया इस लिये कि उसे उन के हाथ
पकड़वा दे। ११ वे यह सुनकर आनन्दित हुए और उस
को रुपये देने को कहा और वह अवसर ढूँढ़ने लगा कि उसे
क्योंकर पकड़वा दे॥

१२ अखमीरी रोटी के पर्ब्ब के पहिले दिन जिस में वे
फसह का मेम्ना मारते थे उस के चेलों ने उस से पूछा तू
कहां चाहता है कि हम जाकर तेरे लिये फसह खाने की
तैयारी करें । १३ उस ने अपने चेलों से दो को यह कहकर
भेजा कि नगर में जाओ और एक मनुष्य जल का
घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा उस के पीछे हो लेना ।
१४ और वह जिस घर में जाए उस घर के स्वामी से
कहना गुरू कहता है कि मेरी पाहुनशाला जिस में मैं
अपने चेलों के साथ फसह खाऊं कहां है । १५ वह तुम्हें
एक सजी सजाई और तैयार की हुई बड़ी अटारी दिखा
देगा वहां हमारे लिये तैयारी करो । १६ सो चेले निकल कर
नगर में आए और जैसा उस ने उन से कहा था वैसा ही
पाया और फसह तैयार किया ॥

१७ जब सांझ हुई तो वह बारहों के साथ आया । १८ जब
वे बैठे भोजन कर रहे थे तो यीशु ने कहा मैं तुम से सच
कहता हूं कि तुम में से एक जो मेरे साथ भोजन कर रहा
है मुझे पकड़वाएगा । १९ वे उदास होने और एक एक
करके उस से कहने लगे क्या वह मैं हूं । २० उसने उन से
कहा वह बारहों में से एक है जो मेरे साथ थाली में हाथ
डालता है । २१ क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो जैसा उस के
विषय में लिखा है जाता ही है परन्तु उस मनुष्य पर हाय
जिस के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है । यदि

उस मनुष्य का जन्म न होता तो उस के लिये भला
होता॥
२२ और जब वे खा रहे थे तो उस ने रोटी ली और
आशीष मांग कर तोड़ी और उन्हें दी और कहा लो यह
मेरी देह है। २३ और उस ने कटोरा ले धन्यवाद किया
और उन्हें दिया और उन सब ने उसमें से पिया। २४ और
उस ने उन से कहा यह वाचा का मेरा वह लोहू है जो
बहुतों के लिये बहाया जाता है। २५ मैं तुम से सच कहता
हूं कि दाख का रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा जब तक
परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊं॥
२६ फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़ पर गए॥
२७ तब यीशु ने उन से कहा तुम सब ठोकर खाओगे
क्योंकि लिखा है कि मैं रखवाले को मारूंगा और भेड़ें तित्तर
बित्तर हो जाएंगी। २८ पर मैं अपने जी उठने के पीछे तुम
से पहिले गलील को जाऊंगा। २९ पतरस ने उस से कहा
यदि सब ठोकर खाएं तो खाएं पर मैं ठोकर नहीं खाऊंगा।
३० यीशु ने उस से कहा मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज
इसी रात मुर्ग़ के दो बार बांग देने से पहिले तू तीन बार
मुझ से मुकर जाएगा। ३१ पर उस ने और भी बल से कहा
यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो तौ भी तुझ से कभी
न मुकरूंगा। ऐसा ही और सब ने भी कहा॥
३२ फिर वे गतसमने नाम एक जगह में आए और

उस ने अपने चेलों से कहा यहां बैठे रहो जब तक मैं प्रार्थना
करूं । ३३ और वह पतरस और याकूब और यूहन्ना को
अपने साथ ले गया । ३४ और बहुत चकित और व्याकुल
होने लगा । और उन से कहा मेरा मन बहुत उदास है यहां
तक कि मैं मरने पर हूं । ३५ तुम यहां ठहरो और जागते
रहो । और वह थोड़ा आगे बढ़ा और भूमि पर गिर कर
प्रार्थना करने लगा कि यदि हो सके तो यह घड़ी मुझ पर
से टल जाए । ३६ और कहा हे अब्बा हे पिता तुझ से सब
कुछ हो सकता है इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले तौ भी
जो मैं चाहता हूं वह नहीं पर जो तू चाहता है वही हो ।
३७ फिर वह आया और उन्हें सोते पाकर पतरस से कहा
हे शमौन तू सो रहा है क्या तू एक घड़ी भी न जाग सका
३८ जागते और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न
पड़ो । ३९ आत्मा तो तैयार है पर शरीर दुर्बल है ।
और वह फिर चला गया और वही बात कह कर प्रार्थना
की । ४० और फिर आकर उन्हें सोते पाया क्योंकि उन की
आंखें नींद से भरी थीं और न जानते थे कि उसे क्या उत्तर
दें । ४१ फिर तीसरी बार आकर उन से कहा अब सोते
रहो और विश्राम करते रहो बस घड़ी आ पहुँची देखो
मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है । ४२ उठो
चलें देखो मेरा पकड़ने वाला निकट आ पहुँचा है ॥

४३ वह यह कह ही रहा था कि यहूदा जो बारहों में

से था अपने साथ महायाजकों और शास्त्रियों और पुरनियों
की ओर से एक बड़ी भीड़ तलवारें और लाठियां लिए हुए
तुरन्त आ पहुँचा । ४४ और उस के पकड़ने वाले ने उन्हें
यह पता दिया था कि जिस को मैं चूमूं वही है उसे पकड़
कर यतन से ले जाना । ४५ और वह आया और तुरन्त
उस के पास जाकर कहा हे रब्बी और उस को बहुत चूमा
४६ तब उन्होंने उस पर हाथ डाल कर उसे पकड़ लिया ।
४७ उन में से जो पास खड़े थे एक ने तलवार खींच कर
महायाजक के दास पर चलाई और उस का कान उड़ा दिया
४८ यीशु ने उन से कहा क्या तुम डाकू जान कर मेरे पकड़ने
के लिये तलवारें और लाठियां ले कर निकले हो । ४९
मैं तो हर दिन मन्दिर में तुम्हारे साथ रह कर उपदेश दिया
करता था और तब तुम ने मुझे न पकड़ा । पर यह इस लिये
हुआ कि पवित्र शास्त्र की बातें पूरी हों । ५० इस पर सब
चेले उसे छोड़ कर भाग गए ॥

५१ और एक जवान अपनी नंगी देह पर चादर ओढ़े
हुए उस के पीछे हो लिया और लोगों ने उसे पकड़ा । ५२ पर
वह चादर छोड़कर नंगा भाग गया ॥

५३ फिर वे यीशु को महायाजक के पास ले गए और
सब महायाजक और पुरनिए और शास्त्री उस के यहां इकट्ठे
हो गए । ५४ पतरस दूर दूर उस के पीछे पीछे महायाजक के
आंगन के भीतर तक गया और प्यादों के साथ बैठ कर आग

तापने लगा । ५५ महायाजक और सारी महासभा यीशु के मार
डालने के लिये उस के विरोध में गवाही की खोज में थे पर न
पाई । ५६ क्योंकि बहुतेरे उस के विरोध में झूठी गवाही देरहे
थे पर उन की गवाही एकसी न थी । ५७ तब कितनों ने उठ
कर उस पर यह झूठी गवाही दी ५८ कि हमने इसे यह कहते
सुना कि मैं इस हाथ के बनाये हुए मन्दिर को ढा दूंगा और
तीन दिन में दूसरा बनाऊंगा जो हाथ से न बना हो । ५९
पर यों भी उन की गवाही एक सी न निकली । ६० तब
महायाजक ने बीच में खड़े होकर यीशु से पूछा क्या तू कोई
उत्तर नहीं देता । ६१ ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही
देते हैं पर वह चुप रहा और कुछ उत्तर न दिया । महाया-
जक ने उस से फिर पूछा क्या तू उस परम धन्य का पुत्र
मसीह है । ६२ यीशु ने कहा हां मैं हूं और तुम मनुष्य के पुत्र
को सर्वशक्तिमान की दहिनी ओर बैठे और आकाश के बादलों
के साथ आते देखोगे । ६३ तब महायाजक ने अपने वस्त्र
फाड़कर कहा अब हमें गवाहों का और क्या प्रयोजन है । ६४
तुम ने यह निन्दा सुनी है तुम्हें क्या समझ पड़ता है । सब
ने उसे बध के योग्य ठहराया । ६५ तब कोई उस पर थूकने
और उस का मुंह ढांकने और उसे घूसे मारने और उस से
कहने लगे कि नबूवत कर । और प्यादों ने उसे लेकर
थप्पड़ मारे ॥

६६ जब पतरस नीचे आंगन में था तो महायाजक की

लौंडियों में से एक आई। ६७ और पतरस को आग तापते
देख उस पर टकटकी लगाकर कहने लगी तू भी तो उस
नासरी यीशु के साथ था। ६८ वह मुकर गया और कहा मैं
न जानता और न समझता हूं कि तू क्या कह रही है।
फिर वह बाहर डेवढ़ी में गया और मुर्ग़ ने बांग दी। ६९ वह
लौंडी उसे देख कर उन से जो पास खड़े थे फिर कहने लगी
यह उन में से एक है। ७० पर वह फिर मुकर गया
और थोडी देर पीछे उन्हों ने जो पास खड़े थे फिर पतरस से
कहा सचमुच तू उन में से एक है क्योंकि तू गलीली
भी है। ७१ तब वह धिक्कार देने और किरिया खाने लगा
कि मैं उस मनुष्य को जिस की तुम चरचा करते हो नहीं
जानता। ७२ तब तुरन्त दूसरी बार मुर्ग़ ने बांग दी और
पतरस को वह बात जो यीशु ने उस से कही थी स्मरण
आई कि मुर्ग़ के दो बार बांग देने से पहिले तू तीन बार मुझ
से मुकर जाएगा और वह इस पर सोचकर रोने लगा॥

१५. और भोर होते ही तुरन्त महायाजकों पुरनियों
और शास्त्रियों बरन सारी महासभा ने एका
कर के यीशु को बन्धवाया और उसे ले जाकर पीलातुस के हाथ
सौंप दिया। २ और पीलातुस ने उस से पूछा क्या तू यहूदियों
का राजा है। उस ने उस को उत्तर दिया कि तू आप ही कह
रहा है ३ और महायाजक उस पर बहुत से दोष लगा रहे
थे। ४ पीलातुस ने उस से फिर पूछा क्या तू कुछ उत्तर नहीं

देता देख ये तुझ पर कितनी बातों का दोष लगाते हैं ।
५ फिर भी यीशु ने कुछ उत्तर न दिया यहां तक कि पीलातुस
ने अचम्भा किया ॥

६ और वह उस पर्ब्ब में किसी एक बन्धुए को जिसे वे
चाहते थे उन के लिये छोड़ दिया करता था । ७ बरअब्बा नाम
एक मनुष्य उन बलवाइयों के साथ बन्धुआ था जिन्होंने बलवे
में खून किया था । ८ और भीड़ ऊपर जाकर उस से बिनती
करने लगी कि जैसा तू हमारे लिये करता आया वैसा ही
कर । ९ पीलातुस ने उन को उत्तर दिया क्या तुम चाहते हो
कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूं । १० क्योंकि
वह जानता था कि महायाजकों ने उसे डाह से पकड़वाया
था । ११ पर महायाजकों ने लोगों को उभारा कि वह बर
अब्बा ही को उन के लिये छोड़ दे । १२ यह सुन पीलातुस
ने उन से फिर पूछा तो जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते
हो उसे मैं क्या करूं । वे फिर चिल्लाए कि उसे क्रूस पर
चढ़ा । १३ पीलातुस ने उन से कहा क्यों उस ने क्या बुराई
की है । १४ पर वे और भी चिल्लाए कि उसे क्रूस पर चढ़ा ।
१५ तब पीलातुस ने भीड़ को खुश करने की इच्छा से बर-
अब्बा को उन के लिये छोड़ दिया और यीशु को कोड़े लगवा
कर सौंप दिया कि क्रूस पर चढ़ाया जाए । १६ और सिपाही
उसे किले के भीतर के आंगन में ले गये और सारी पलटन
को बुला लाए । १७ और उन्हों ने उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया

और कांटों का मुकुट गूंथ कर उस के सिर पर रखा।
१८ और उसे नमस्कार करने लगे कि हे यहूदियों के राजा
सलाम। १९ और वे उस के सिर पर सरकण्डे मारते और
उस पर थूकते और घुटने टेक कर उसे प्रणाम करते रहे।
२० और जब वे उस का ठट्ठा कर चुके तो उस पर से बैंजनी
वस्त्र उतार कर उसी के कपड़े पहिनाए और तब उसे क्रूस पर
चढ़ाने के लिये बाहर ले गए॥
२१ और सिकन्दर और रूफुस का पिता शमौन नाम
एक कुरेनी मनुष्य जो गांव से आ रहा था उधर से निकला
उन्हों ने उसे बेगार में पकड़ा कि उस का क्रूस उठा ले चले।
२२ और वे उसे गुलगुता नाम जगह पर जिस का अर्थ खोपड़ी
की जगह है उठा लाए। २३ और उसे मुर मिला हुआ दाखरस
देने लगे पर उस ने न लिया। २४ तब उन्होंने उस को क्रूस
पर चढ़ाया और उस के कपड़ों पर चिट्ठियां डालकर कि किस
को क्या मिले उन्हें बांट लिया। २५ और पहर दिन चढ़ा
था जब उन्हों ने उस को क्रूस पर चढ़ाया। २६ और उसका
दोषपत्र लिखकर उस के ऊपर लगा दिया कि यहूदियों का
राजा। २७ और उन्हों ने उस के साथ दो डाकू एक दहिने
और एक बाएं क्रूसों पर चढ़ाये। २९ और आने जानेवाले
सिर हिला हिलाकर और यह कहकर उस की निन्दा करते
और यह कहते थे कि वाह मन्दिर के ढानेवाले और तीन
दिन में बनानेवाले ३० क्रूस पर से उतर कर अपने आप

को बचा । ३१ इसी रीति से महायाजक भी शास्त्रियों समेत
आपस में ठट्ठे से कहते थे इस ने औरों को बचाया अपने
को नहीं बचा सकता । ३२ इस्राईल का राजा मसीह अब
क्रूस पर से उतरे कि हम देखकर विश्वास करें । जो उस
के साथ क्रूसों पर चढ़ाए गये थे वे भी उस की निन्दा
करते थे ॥

३३ और दोपहर होने पर सारे देश में अंधेरा छा गया
और तीसरे पहर तक रहा । ३४ तीसरे पहर यीशु ने बड़े
शब्द से पुकार कर कहा इलोई इलोई लमा शबक्तनी जिसका
अर्थ यह है हे मेरे परमेश्वर हे मेरे परमेश्वर तू ने मुझे क्यों छोड़
दिया । ३५ जो पास खड़े थे उन में से कितनों ने यह सुनकर
कहा देखो वह एलियाह को पुकारता है । ३६ और एक ने
दौड़कर इस्पञ्ज को सिरके में डुबोया और सरकण्डे पर रखकर
उसे चुसाया और कहा रह जा देखें कि एलियाह उसे उतारने
आता है कि नहीं । ३७ तब यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर
प्राण छोड़ा । ३८ और मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक
फटकर दो टुकड़े हो गया । ३९ जो सूबेदार उस के सामने
खड़ा था जब उसे यूं चिल्लाकर प्राण छोड़ते देखा तो कहा
सचमुच यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था । ४० कई स्त्रियां
भी दूर से देख रही थीं उन में मरयम मगदलीनी और छोटे
याकूब की और योसेस की माता मरियम और शलोमी थीं ।
४१ जब वह गलील में था तो ये उस के पीछे हो लेतीं और

उस की सेवा टहल करती थीं और और भी बहुत सी स्त्रियां
थीं जो उसके साथ यरूशलेम में आई थीं ॥

४२ जब सांझ हो गई तो इसलिये कि तैयारी का दिन था
जो विश्रामवार के एक दिन पहिले होता है ४३ अरिमतिया का
यूसफ आया जो प्रतिष्ठित मंत्री और आप भी परमेश्वर के
राज्य की बाट जोहता था वह हियाव करके पीलातुस के पास
गया और यीशु की लोथ मांगी । ४४ पीलातुस ने अचम्भा
किया कि वह ऐसे शीघ्र मर गया और सूबेदार को बुलाकर
पूछा कि क्या उस को मरे हुए कुछ देर हुई । ४५ सो जब
सूबेदार के द्वारा हाल जान लिया तो लोथ यूसुफ को दिला
दी । ४६ तब उस ने एक चादर मोल ली और लोथ को
उतार कर उस चादर में लपेटा और एक कबर में जो चटान
में खुदी हुई थी रक्खा और कबर के द्वार पर पत्थर लुढ़का
दिया । ४७ और मरयम मगदलीनी और योसेस की माता
मरयम देख रही थीं कि वह कहां रक्खा गया है ॥

१६. जब विश्राम का दिन बीत गया तो मरयम
मगदलीनी और याकूब की माता मरयम और
शालोमी ने सुगन्धित वस्तुएं मोल लीं कि आकर उस पर
मलें । २ और अठवारे के पहिले दिन बड़ी भोर जब सूरज
निकला ही था कबर पर आईं । ३ और आपस में कहती थीं
कि हमारे लिये कबर के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा ।
४ जब उन्हों ने आंख उठाई तो देखा कि पत्थर लुढ़का हुआ

है और वह बहुत बड़ा था । ५ और क़बर के भीतर जाकर
उन्हों ने एक जवान को उजला पैराहन पहिने हुए दाहिनी
ओर बैठे देखा और बहुत चकित हुईं । ६ उस ने उन से कहा
चकित मन हो तुम यीशु नासरी को जो क्रूस पर चढ़ाया गया
था ढूँढ़ती हो । वह जी उठा है यहां नहीं है देखो यही वह
जगह है जहां उन्हों ने उसे रक्खा था । ७ पर तुम जाओ और
उस के चेलों और पतरस से कहो कि वह तुम से पहिले
गलील को जाएगा जैसा उस ने तुम से कहा तुम वहीं उसे
देखोगे । ८ और वे निकल कर क़बर से भाग गईं क्योंकि
उन्हें कँपकँपी और घबराहट ने दबा लिया था सो उन्हों ने
किसी से कुछ न कहा क्योंकि डरती थीं ॥

९ अठवारे के पहिले दिन वह भोर होते ही जी उठ कर
पहिले पहिल मरयम मगदलीनी को जिस में से उस ने सात
दुष्टात्मा निकाले थे दिखाई दिया । १० उस ने जाकर उस के
साथियों को जो शोक करते और रो रहे थे समाचार दिया ।
११ और उन्हों ने यह सुनकर कि वह जीता है और उसे
देखा है प्रतीति न की ॥

१२ इस के पीछे वह दूसरे रूप में उन में से दो को जब
वे गांव की ओर जा रहे थे दिखाई दिया । १३ उन्हों ने भी
जाकर औरों को समाचार दिया पर उन्हों ने उन की भी
प्रतीति न की ॥

१४ पीछे वह उन ग्यारहों को भी जब वे भोजन करने

बैठे थे दिखाई दिया और उन के अविश्वास और मन की
कठोरता पर उलाहना दिया क्योंकि जिन्हों ने उस के जी उठने
के पीछे उसे देखा था इन्हों ने उन की प्रतीति न की थी।
१५ और उस ने उन से कहा तुम सारे जगत में जाकर सारी
सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। १६ जो विश्वास
करे और बपतिसमा ले उस का उद्धार होगा पर जो विश्वास
न करे वह दोषी ठहराया जाएगा। १७ और विश्वास करने-
वालों में ये चिन्ह होंगे वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निका-
लेंगे १८ नई नई भाषा बोलेंगे सांपों को उठा लेंगे और यदि
वे नाशक वस्तु पीएं तो उन की कुछ हानि न होगी वे बीमारों
पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे॥

१९ सो प्रभु यीशु उन से बातें करने के पीछे स्वर्ग पर उठा
लिया गया और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया। २० और
उन्हों ने निकल कर हर कहीं प्रचार किया और प्रभु उन के
साथ साथ काम करता रहा और उन चिन्हों के द्वारा जो होते
थे बचन को दृढ़ करता रहा। आमीन॥

The Mission Press, Allahabad.